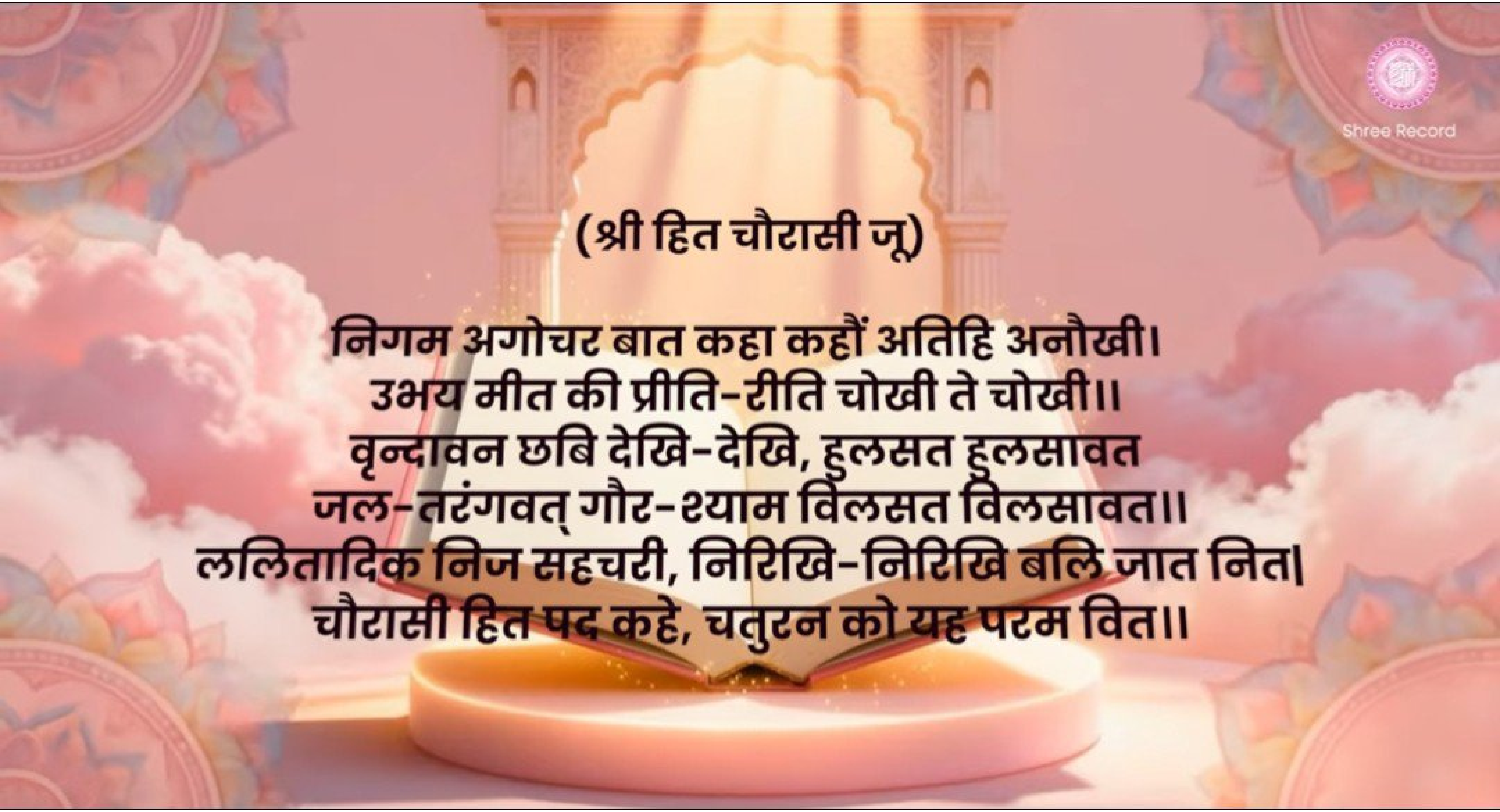
श्रीहितं वन्दे

श्रीहित हरिवंश महाप्रभुपाद प्रणीत-

श्रीहित चौरासी एवं स्फुट वाणी

टीका सहित




Shree Record
(श्री हित चौरासी जू)
निगम अगोचर बात कहा कहौं अतिहि अनौखी।
उभय मीत की प्रीति-रीति चोखी ते चोखी।।
वृन्दावन छबि देखि-देखि, हुलसत हुलसावत
जल-तरंगवत् गौर-श्याम विलसत विलसावत।।
ललितादिक निज सहचरी, निरिखि-निरिखि बलि जात नित|
चौरासी हित पद कहे, चतुरन को यह परम वित।।

पद-1

जोई-जोई प्यारौ करै सोई मोहि भावै,
भावै मोहि जोई सोई-सोई करैं प्यारे ।
मोकों तो भावती ठौर प्यारे के नैंनन में,
प्यारौ भयौ चाहै मेरे नैंनन के तारे ।।
मेरे तन मन प्राण हूँ ते प्रीतम प्रिय,
अपने कोटिक प्राण प्रीतम मोंसों हारे ।
जय श्री हित हरिवंश हंस-हंसिनी साँवल-गौर,
कहौ कौन करै जल-तरंगनी न्यारे ।।1।।

Shree Record

पद-2

प्यारे बोली भामिनी आजु नीकी जामिनी,
भेंट नवीन मेघ सों दामिनी ।
मोहन रसिक-राइरी माई, तासौं जु
मान करै, ऐसी कौन कामिनी ।
(जै श्री) हित हरिवंश श्रवण सुनत प्यारी,
राधिका रवन सों मिली गज-गामिनी ।।2।।

पद-3

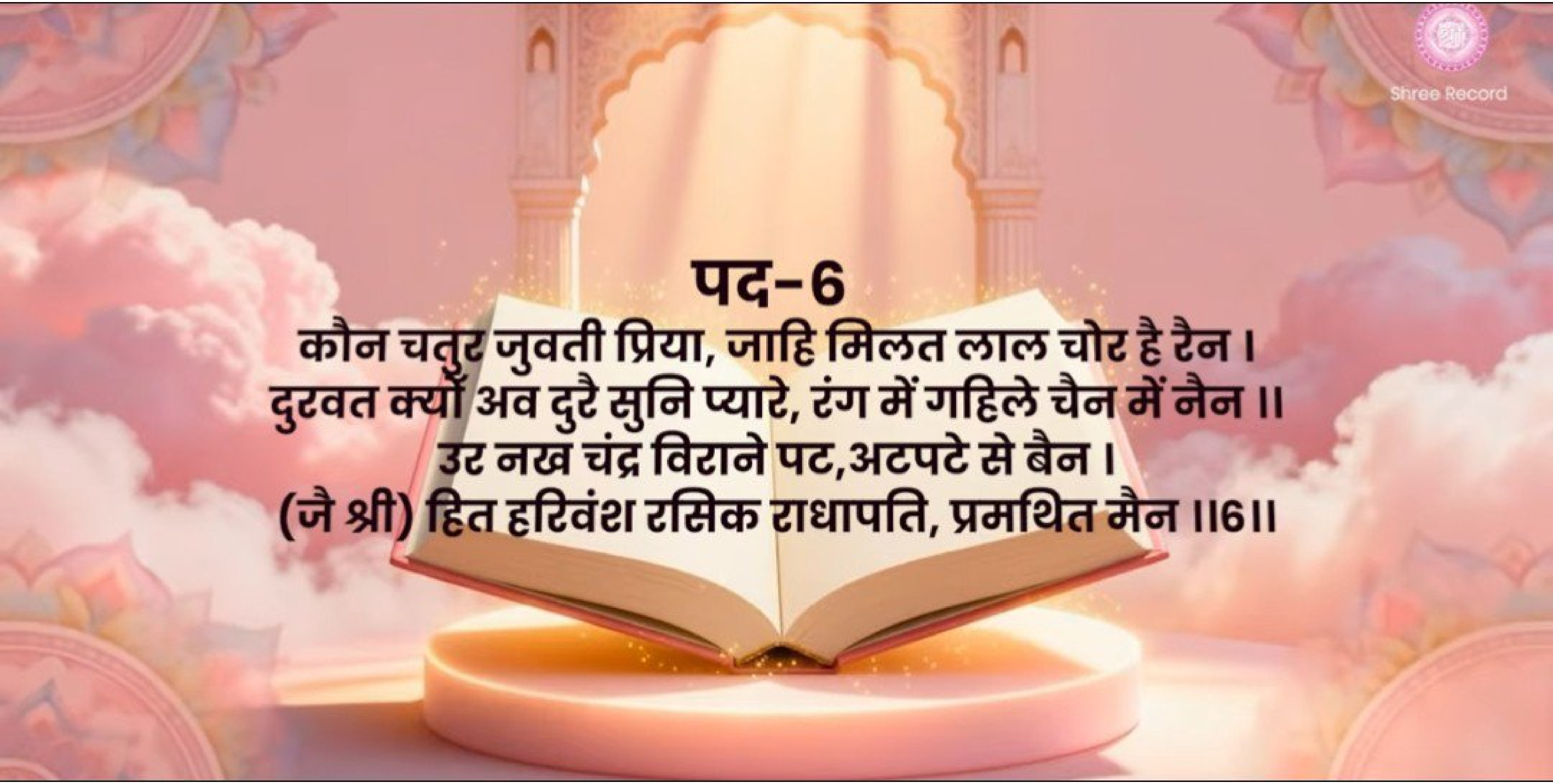
प्रात समय दोऊ रस लंपट,
सूरत-जुद्ध जय-जुत अति फूल ।
श्रम वारिज घनविन्दु वदन पर,
भूषण अंगहि अंग विकूल ॥
कछु रह्यौ तिलक शिथिल अलकावलि,
वदन कमल मानौं अलि भूल ।
(जै श्री) हित हरिवंश मदन-रंग रँगि रहे,
नैंन बैंन कटि शिथिल दुकूल ॥3॥

पद-4

आजु तौ जुवति तेरौ, वदन आनन्द भरयौ, पिय के संगम के सूचत सुख चैंन ।
आलस-वलित बोल, सुरंग रँगे कपोल, विथकित अरूण उनींदे दोऊ नैंन ॥
रुचिर तिलक-लेश, किरत कुसुम-केश, सिर सीमंत भूषित मानौं तैं न ।
करूणाकर उदार, राखत कछु न सार, दसन-वसन लागत जब दैन ॥
काहे कौं दुरत भीरू, पलटे प्रीतम चीर, बस किये श्याम सिखै सत मैंन ।
गलित उरसि माल, सिथिल किंकिनी जाल, (जै श्री) हित हरिवंश लता-गृह सैंन।।4।।

पद-5

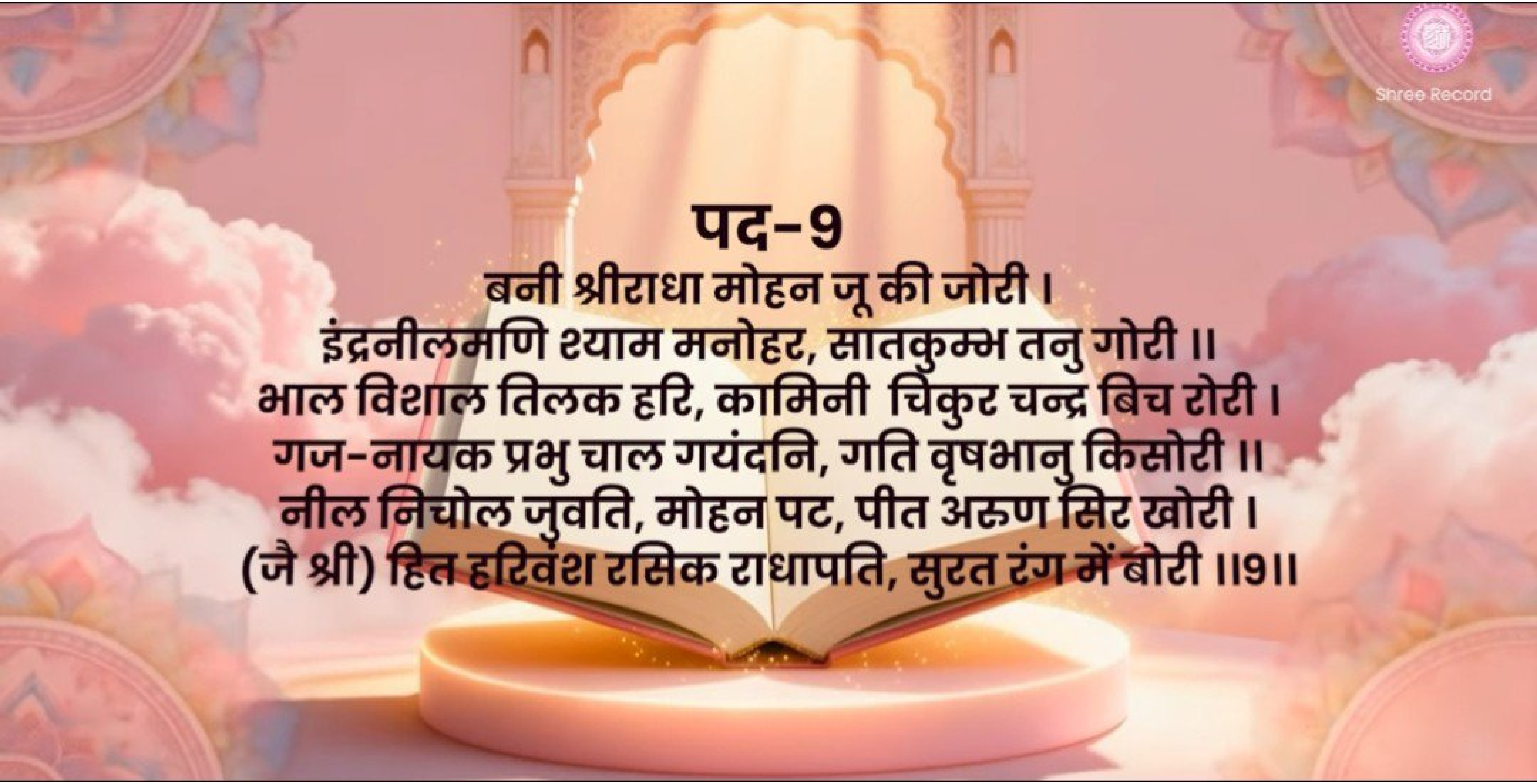
आजु प्रभात लता-मंदिर में, सुख बरसत अति हरषि युगल वर ।
गौर श्याम अभिराम रंगभरे, लटकि-लटकि पग धरत अवनि पर ॥
कुच-कुमकुम रंजित मालावलि, सुरत नाथ श्रीश्याम धाम धर ।
प्रिया प्रेम के अंक अलंकृत, चित्रित चतुर-शिरोमणि निजकर ॥
दम्पति अति अनुराग मुदित कल, गान करत मन हरत परस्पर ।
(जैश्री) हित हरिवंश प्रशंस-परायण, गायन अलि सुर देत मधुर तर ।।5।।


Shree Record
पद-6
कौन चतुर जुवती प्रिया, जाहि मिलत लाल चोर है रैन ।
दुरवत क्यों अव दुरै सुनि प्यारे, रंग में गहिले चैन में नैन ।।
उर नख चंद्र विराने पट,अटपटे से बैन ।
(जै श्री) हित हरिवंश रसिक राधापति, प्रमथित मैन ।।6।।

पद-7

आजु निकुंज मंजु में खेलत, नवल किशोर नवीन किशोरी ।
अति अनुपम अनुराग परस्पर, सुनि अभूत भूतल पर जोरी ।।
विद्रुम फटिक विविध निर्मिंत धर, नव कर्पूर पराग न थोरी ।
कौमल किसलय सयन सुपेसल, तापर श्याम निवेसित गोरी ।।
मिथुन हास-परिहास परायण, पीक कपोल कमल पर झोरी ।
गौर श्याम भुज कलह मनोहर, नीवी-बंधन मोचत डोरी ।।
हरि-उर-मुकुर विलोकि अपनपौ, विभ्रम विकल मान-जुत भोरी ।
चिबुक सुचारू प्रलोइ प्रबोधत, पिय-प्रतिबिंब जनाय निहोरी ।।
नेति-नेति बचनामृत सुनि-सुनि, ललितादिक देखत दुरि चोरी ।
(जै श्री) हित हरिवंश करत कर धूनन, प्रणयकोप मालावलि तोरी ।।7।।


Shree Record
पद-8
अति ही अरूण तेरे नैंन नलिन री ।
आलस जुत इतरात रँगमगे, भये निशि जागर मषिन मलिन री ।।
शिथिल पलक में उठत गोलक गति, विंधयौ मोहन मृग सकत चलि न री ।
(जै श्री) हित हरिवंश हंस कल गामिनि, संभ्रम देत भ्रमरन अलिन री ।।8।।


Shree Record
पद-9
बनी श्रीराधा मोहन जू की जोरी ।
इंद्रनीलमणि श्याम मनोहर, सातकुम्भ तनु गोरी ।।
भाल विशाल तिलक हरि, कामिनी चिकुर चन्द्र बिच रोरी ।
गज-नायक प्रभु चाल गयंदनि, गति वृषभानु किसोरी ।।
नील निचोल जुवति, मोहन पट, पीत अरूण सिर खोरी ।
(जै श्री) हित हरिवंश रसिक राधापति, सुरत रंग में बोरी ।।9।।

पद-10

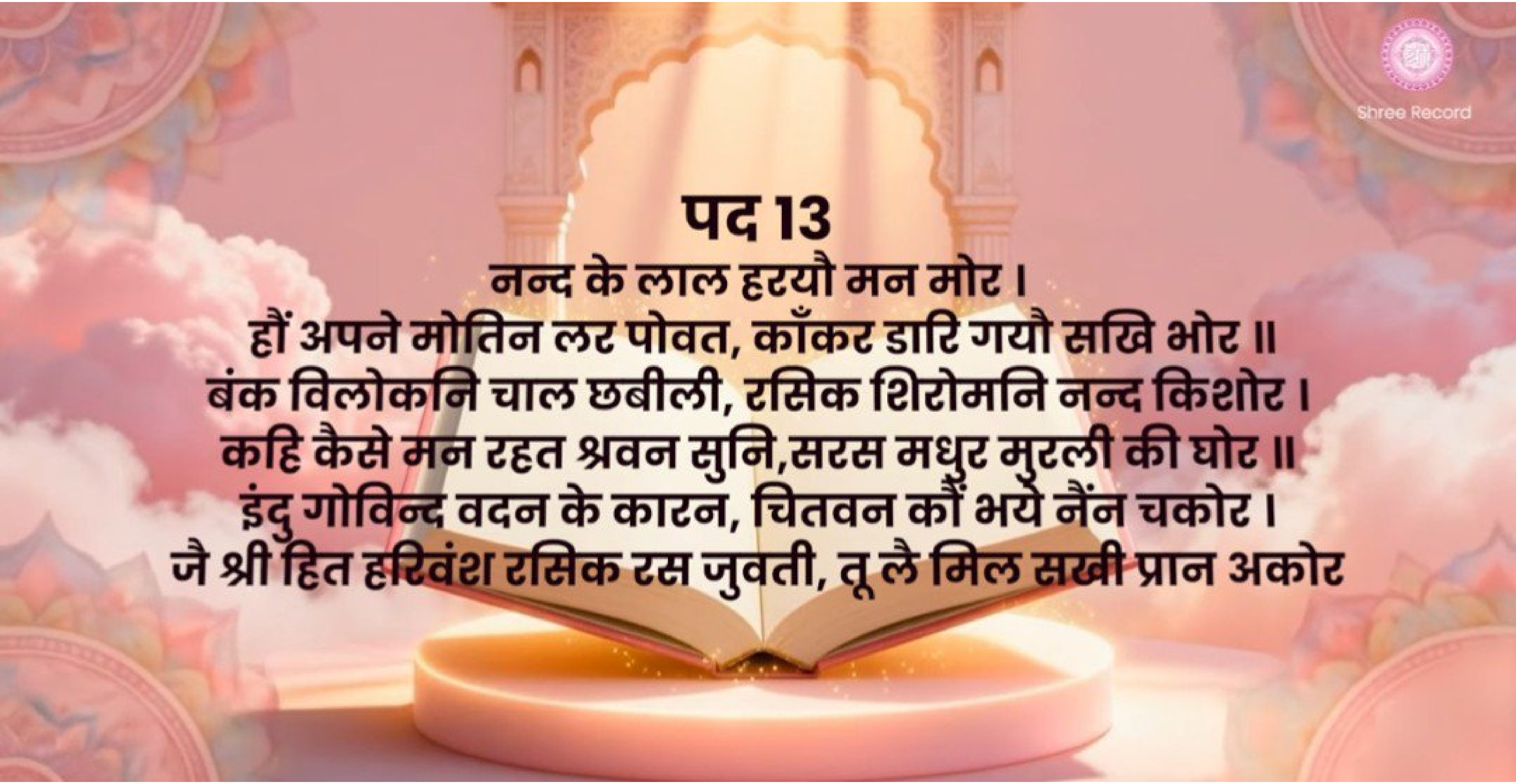
आजु नागरी-किशोर, भाँवती विचित्र जोर, कहा कहौं अंग-अंग परम माधुरी ।
करत केलि कंठ मेलि, बाहुदंड, गंड–गंड, परस, सरस रास लास मंडली जुरी ।।
श्याम सुन्दरी बिहार, बाँसुरी मृदंग तार, मधुर घोष नूपुरादि किंकिनी चुरी ।
(जै श्री) देखत हरिवंश आलि, निर्तनी सुधंग चाल, वारि फेर देत प्राण देह सौं दुरी ।।10।।

पद-11

मंजुल कल कुंज देश, राधा हरि विशद वेश, राका नभ कुमुद-बंधु, शरद जामिनी ।
साँवल दुति कनक अंग, बिहरत मिलि एक संग, नीरद मनौ नील मध्य, लसत दामिनी ।।
अरूण पीत नव दुकूल, अनुपम अनुराग मूल, सौरभयुत शीत अनिल, मंद गामिनी ।
किसलय दल रचित शैन, बोलत पिय चाटु बैन, मान सहित प्रतिपद, प्रतिकूल कामिनी ।।
मोहन मन मथत मार, परसत कुच-नींवि-हार, वेपथयुत नेति नेति, बदत भामिनी ।।
नरवाहन प्रभु सुकेलि, बहुविध भर भरत झोलि, सौरत रस रूप नदी जगत पावनी ।।11।।

पद-12

चलहि राधिके सुजान, तेरे हित सुख निधान,
रास रच्यो श्याम तट कलिंद-नन्दिनी ।
निर्तत युवती समूह, राग रंग अति कुतूह,
बाजत रसमूल मुरलिका अनन्दिनी ।
वंशीवट निकट जहाँ, परम रमणि भूमि तहाँ,
सकल सुखद मलय बहै वायु मन्दिनी ।
जाती ईषद विकास, कानन अतिसय सुवास,
राका निशि शरद मास, विमल चन्दिनी ।।
नरवाहन प्रभु निहारि, लोचन भरि घोष-नारि,
नख-सिख सौंदर्य काम-दुख-निकन्दिनी ।
विलसहु भुज ग्रीव मेलि, भामिनि सुख-सिन्धु झेलि,
नव निकुंज श्याम केलि जगत वन्दिनी ।।12।।


Shree Record
पद 13
नन्द के लाल हरयौ मन मोर ।
हौं अपने मोतिन लर पोवत, काँकर डारि गयौ सखि भोर ॥
बंक विलोकनि चाल छबीली, रसिक शिरोमनि नन्द किशोर ।
कहि कैसे मन रहत श्रवन सुनि,सरस मधुर मुरली की घोर ॥
इंदु गोविन्द वदन के कारन, चितवन कौं भये नैंन चकोर ।
जै श्री हित हरिवंश रसिक रस जुवती, तू लै मिल सखी प्रान अकोर

पद 14

अधर अरूण तेरे कैसे के दुराऊँ ।

रवि ससि शंक भजन कियौ अपवस, अद्‌भुत रंगन कुसुम बनाऊँ

सुभ कौसेय कसिव कौस्तुभमनि, पंकज सुतन लै अंगनु लुपाऊँ

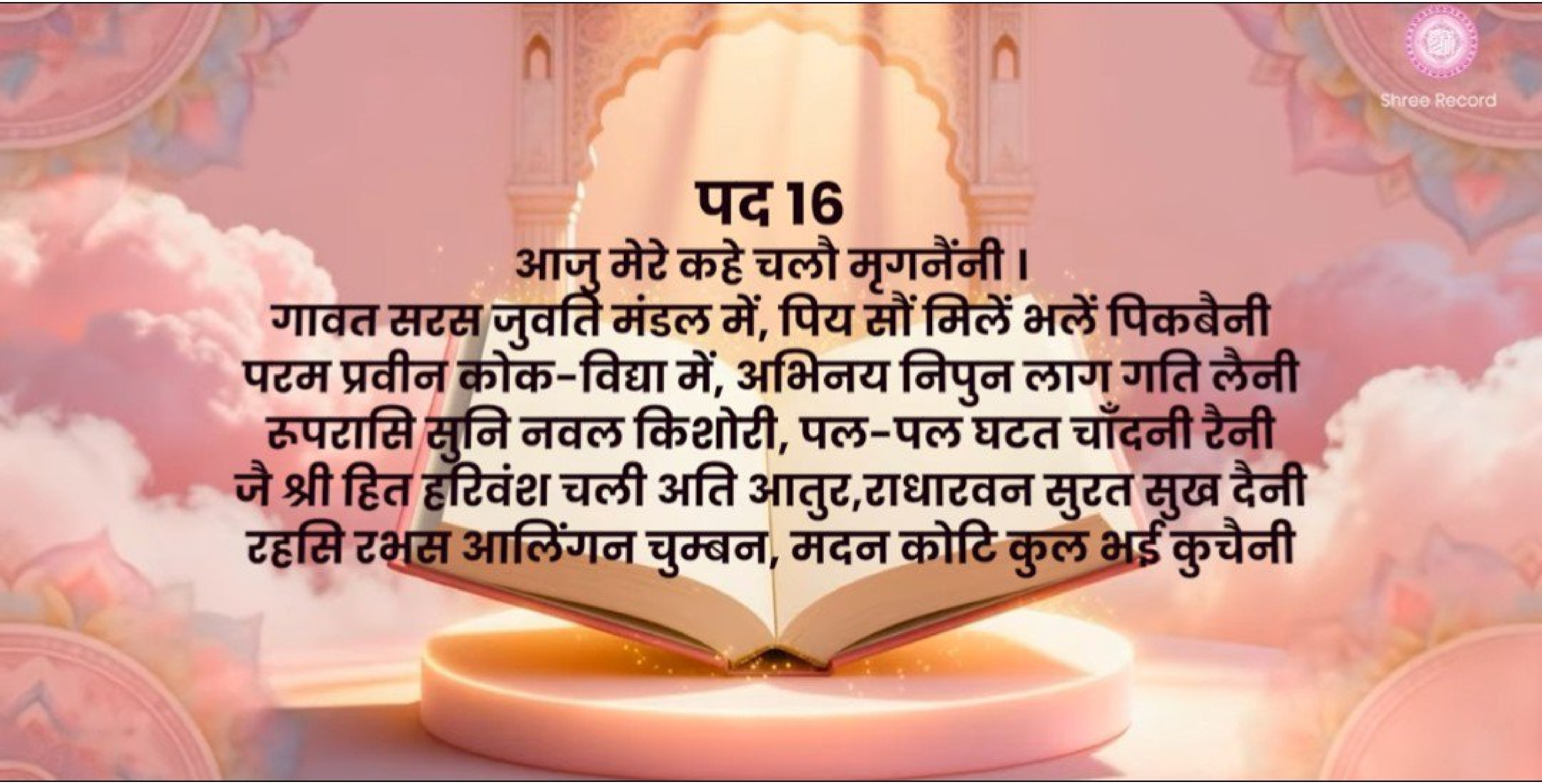
हरषित इन्दु तजत जैसे जल धर, सो भ्रम ढूँढ़ि कहाँ हौं पाऊँ

अम्बुन दम्भ कछू नहीं व्यापत, हिमकर तपै ताहि कैसे कै बुझाऊँ

जै श्री हित हरिवंश रसिक नवरंग पिय, भृकुटी भौंह तेरे खंजन लराऊँ

पद 15

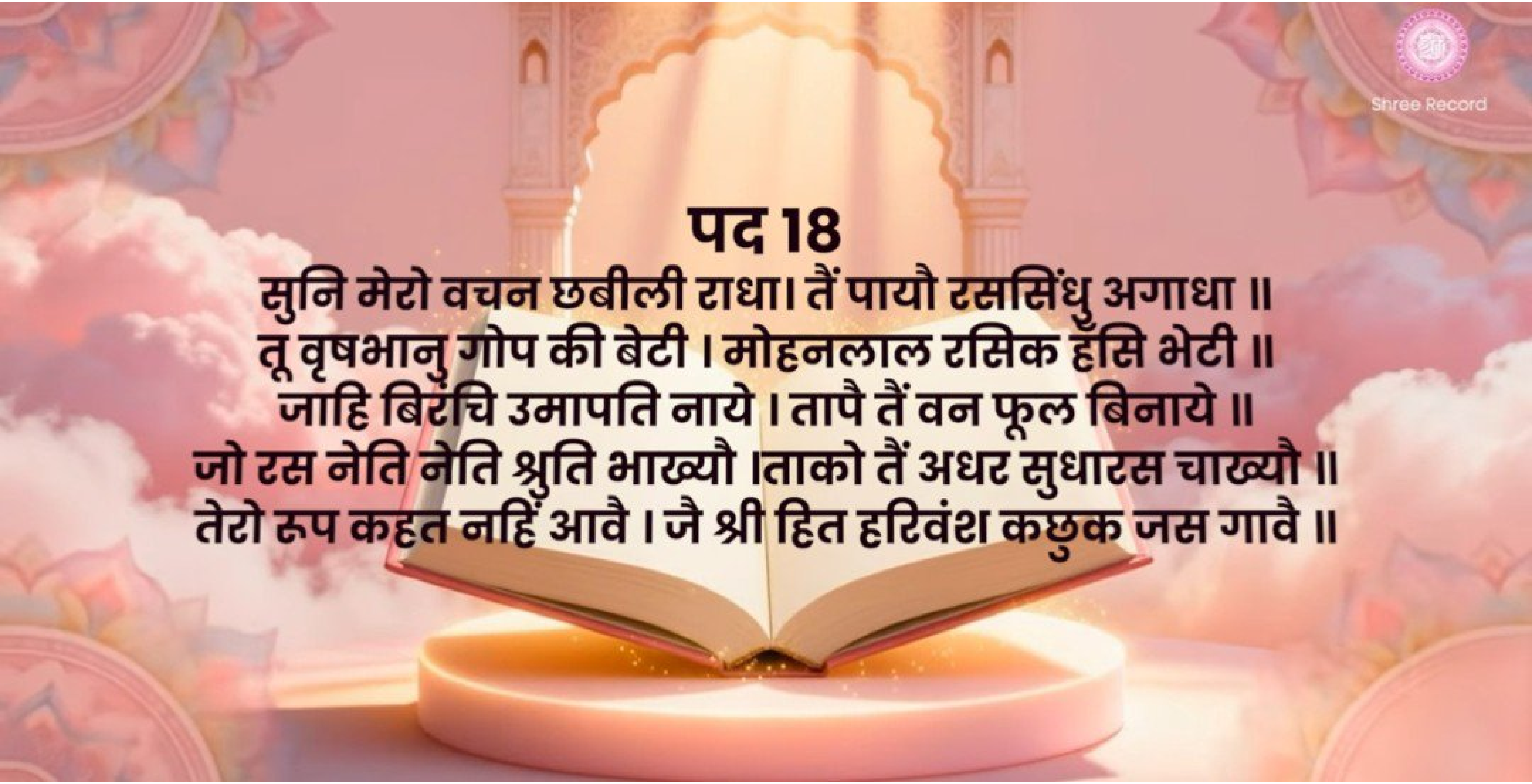
अपनी बात मोसों कहि री भामिनी, औंगी मौंगी रहत गरव की माती।
हौंतोसौं कहत हारी, सुनिरी राधिका प्यारी, निशि को रंग क्यौं न कहत लजाती ॥
गलित कुसुम बैनी, सुनिरी सारंग नैनी, छुटी लट अचरा बढ़त अलसाती
अधर निरंग रंग रच्यौरी कपोलन, जुवति चलत गजगति अरुझाती ॥
रहसि रमी छबीले, रसन वसन ढीले, शिथिल कसनि कंचुकी उर राती।
सखी सौं सुनि श्रवन, वचन मुदित मन, चली हरिवंश भवन मुसिकाती



Shree Record
पद 16
आजु मेरे कहे चलौ मृगनैंनी ।
गावत सरस जुवति मंडल में, पिय सौं मिलें भलें पिकबैनी
परम प्रवीन कोक-विद्या में, अभिनय निपुन लाग गति लैनी
रूपरासि सुनि नवल किशोरी, पल-पल घटत चाँदनी रैनी
जै श्री हित हरिवंश चली अति आतुर,राधारवन सुरत सुख दैनी
रहसि रभस आलिंगन चुम्बन, मदन कोटि कुल भई कुचैनी

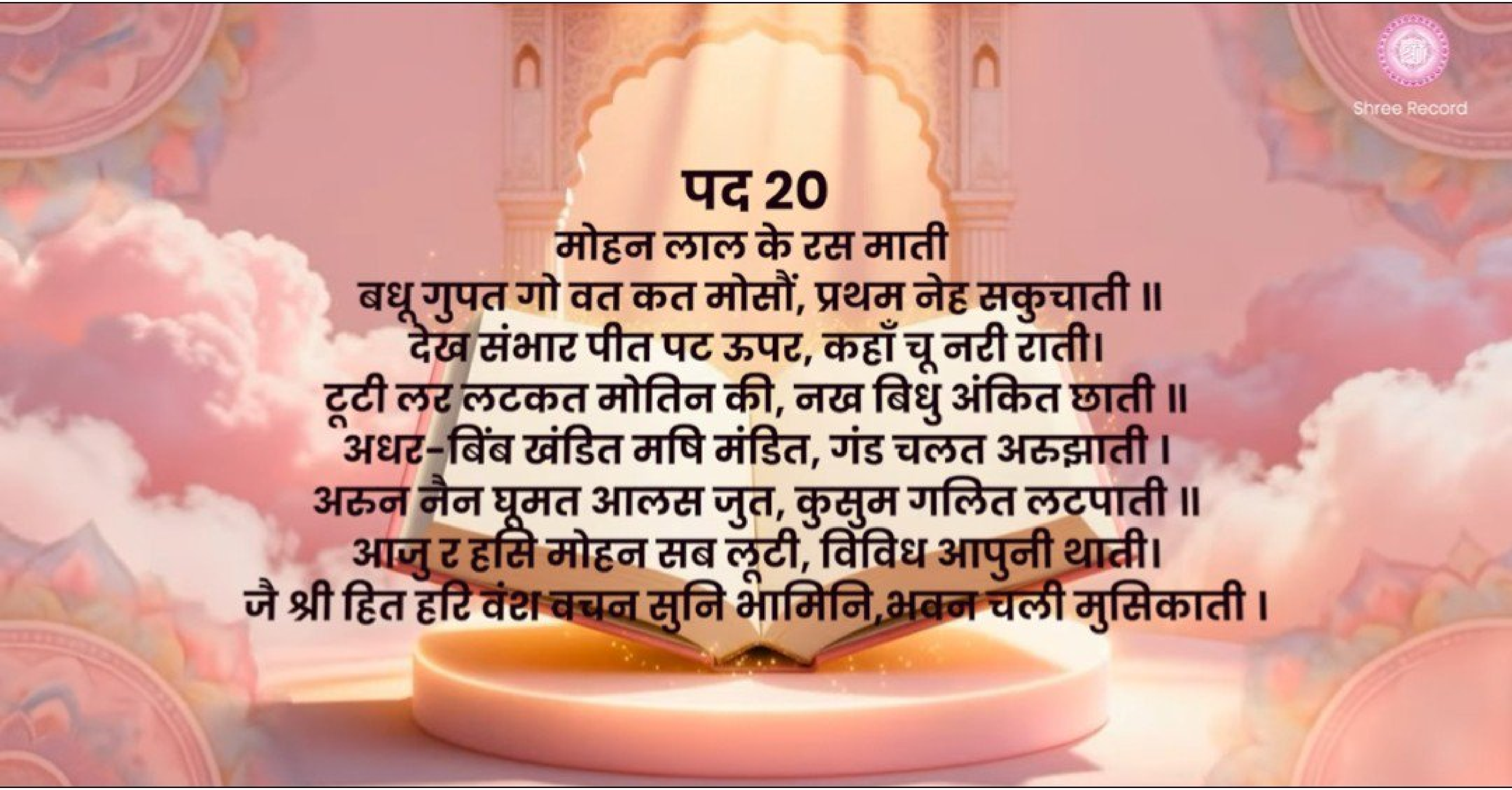
पद 17

आजु देखि ब्रजसुन्दरी मोहन बनी केलि ।
अंस-अंस बाहु दै, किशोर जोर रूप रासि, मनौ तमाल अरूझि रही सरस कनक बेलि
नव निकुंज भ्रमर गुञ्ज, मंजु घोष प्रेम पुञ्ज, गान करत मोर पिकन अपने सुर सों मेलि ।
मदन मुदित अंग-अंग, बीच बीच सुरत रंग, पल पल हरिवंश पिवत नैन चषक झेलि ॥


Shree Record
पद 18
सुनि मेरो वचन छबीली राधा। तैं पायौ रससिंधु अगाधा ॥
तू वृषभानु गोप की बेटी । मोहनलाल रसिक हँसि भेटी ॥
जाहि बिरंचि उमापति नाये । तापै तैं वन फूल बिनाये ॥
जो रस नेति नेति श्रुति भाख्यौ ।ताको तैं अधर सुधारस चाख्यौ ॥
तेरो रूप कहत नहिं आवै । जै श्री हित हरिवंश कछुक जस गावै ॥

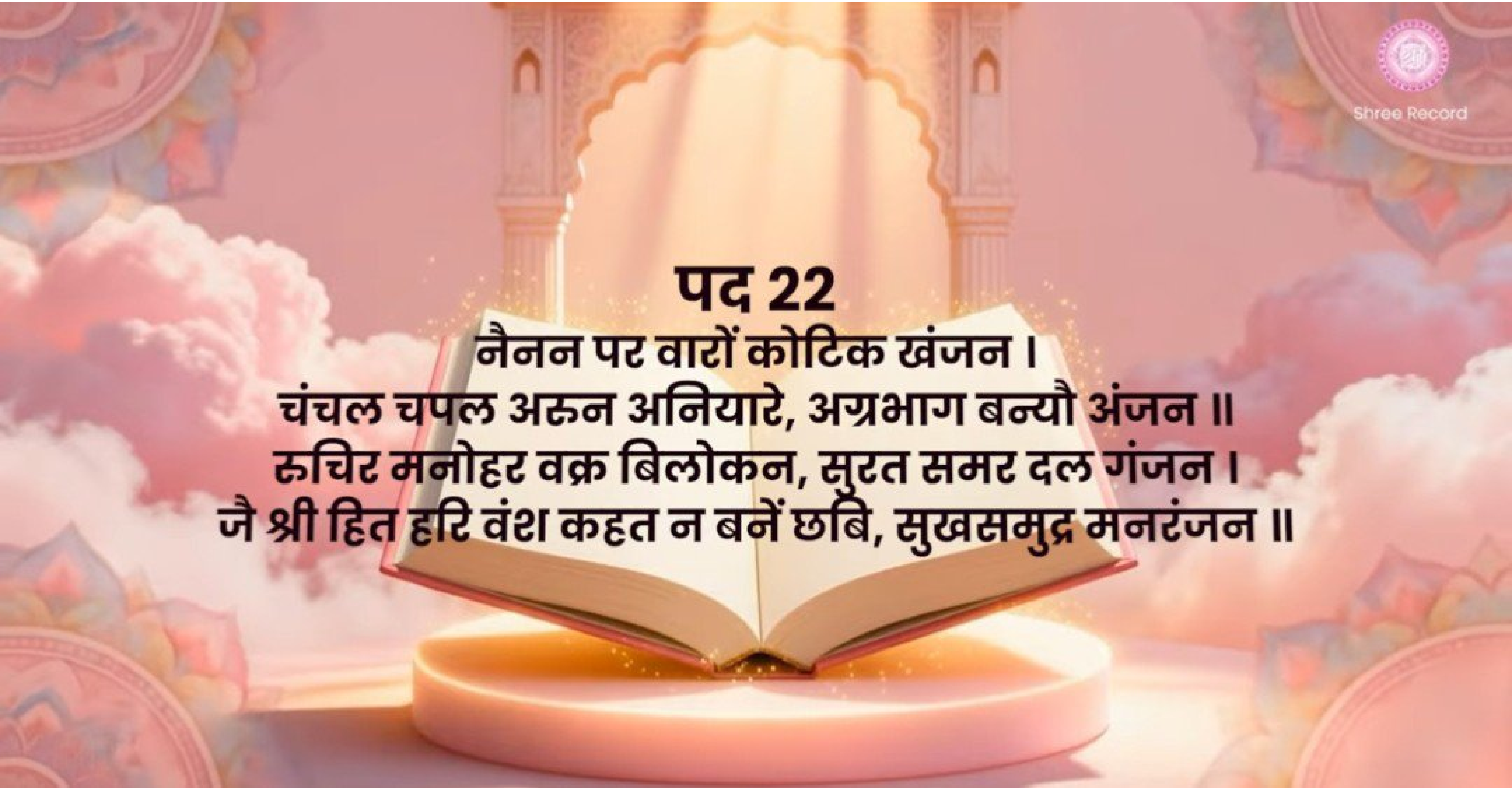
पद 19

खेलत रास रसिक ब्रज मण्डन । जुवतिन अंस दिये भुज दण्डन ॥
सरद विमल नभ चन्द्र विराजै । मधुर-मधुर मुरली कल बाजे ॥
अति राजत घनश्याम तमाला । कंचन बेलि बनी ब्रजबाला ॥
बाजत ताल मृदंग उपंगा। गान मथत मन कोटि अनंगा ॥
भूषन बहुत विविध रंग सारी । अंग सुधंग दिखावत नारी ॥
बरसत कुसुम मुदित सुरयोषा । सुनियत दिवि ढुंदुभि कल घोषा ॥
जै श्री हित हरिवंश मगन मन श्यामा । राधा रवन सकल सुख धामा ॥


Shree Record
पद 20
मोहन लाल के रस माती
बधू गुपत गो वत कत मोसौं, प्रथम नेह सकुचाती ॥
देख संभार पीत पट ऊपर, कहाँ चू नरी राती।
टूटी लर लटकत मोतिन की, नख बिधु अंकित छाती ॥
अधर-बिंब खंडित मषि मंडित, गंड चलत अरुझाती ।
अरुन नैन घूमत आलस जुत, कुसुम गलित लटपाती ॥
आजु र हसि मोहन सब लूटी, विविध आपुनी थाती।
जै श्री हित हरि वंश वचन सुनि भामिनि,भवन चली मुसिकाती ।

पद 21

तेरे नैंन करत दोऊ चारी ।
अति कुलकात समात नहीं कहूँ, मिले हैं कुन्ज बिहारी ॥
बिथुरी माँग कुसुम गिरि गिरि परै , लटकि रही लट न्यारी।
उर नख-रेख प्रगट देखियत है, कहा दुरावत प्यारी ॥
परी है पीक सुभग गंडन पर, अधर निरंग सुकुमारी ।
जै श्री हित हरि वंश रसिकनी भामिनि, आलस अँग अँग भारी ॥

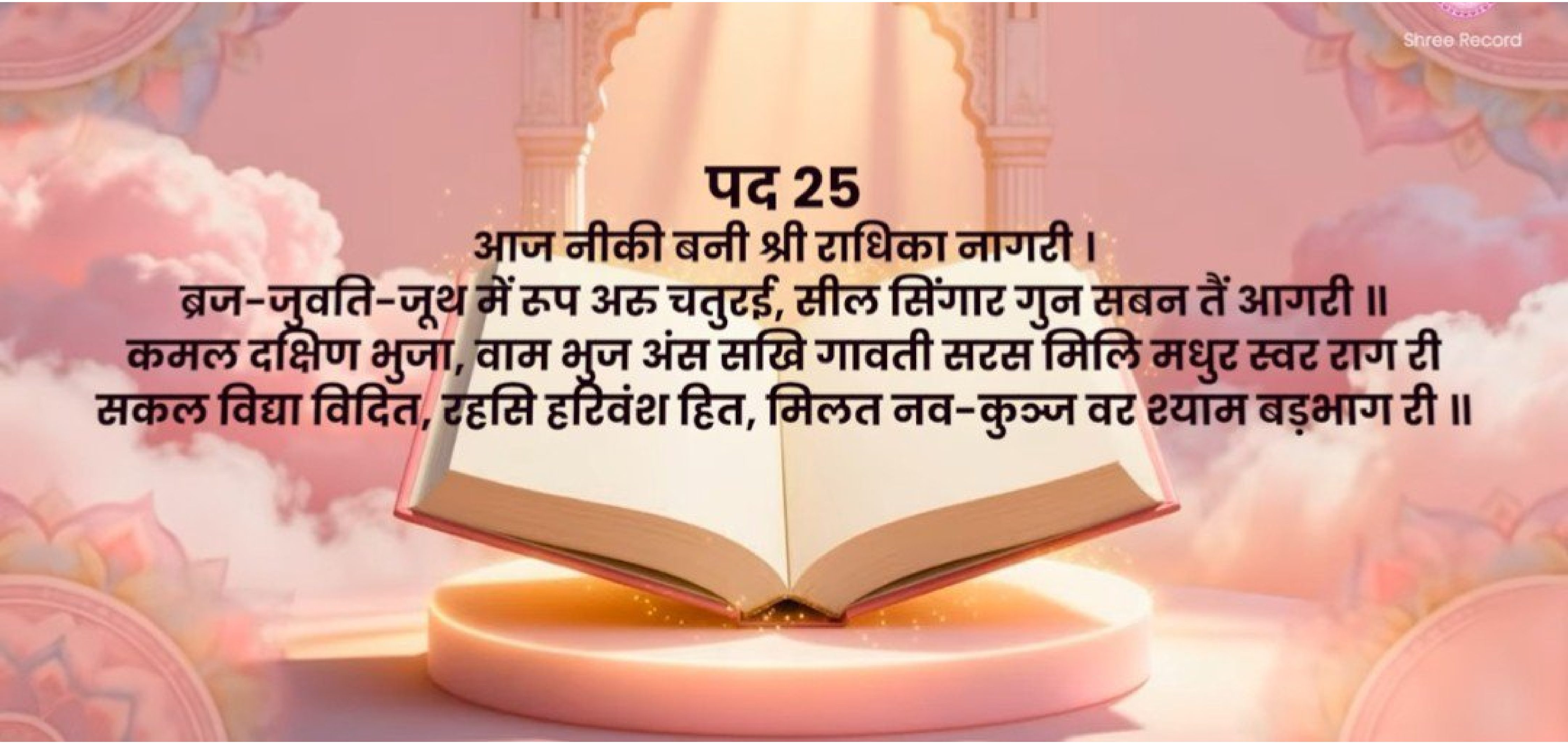

Shree Record
पद 22
नैनन पर वारों कोटिक खंजन ।
चंचल चपल अरून अनियारे, अग्रभाग बन्यौ अंजन ॥
रुचिर मनोहर वक्र बिलोकन, सुरत समर दल गंजन ।
जै श्री हित हरि वंश कहत न बनें छबि, सुखसमुद्र मनरंजन ॥

पद 23

राधा प्यारी तेरे नैंन सलोल ।
तैं निज भजन कनक तन जोवन, लियौ मनोहर मोल ॥
अधर निरंग अलक लट छूटी, रंजित पीक कपोल ।
तू रस मगन भई नहिं जानत, ऊपर पीत निचोल ॥
कुच युग पर नख रेख प्रगट मानौं, शंकर सिर ससि टोल ।
जै श्री हित हरि वंश कहत कछु भामिनि, अति आलस सौं बोल ॥

पद 24

आजु गोपाल रास रस खेलत, पुलिन कल्पतरु तीर री सजनी ।
सरद विमल नभ चन्द्र विराजत, रोचक त्रिविध समीर री सजनी ॥
चंपक बकुल मालती मुकुलित, मत्त मुदित पिक कीर री सजनी ॥
देसी सुधंग राग रंग नीको, ब्रज-जुवतिन की भीर री सजनी ॥
मघवा मुदित निसान बजायौ, व्रत छाँड्यौ मुनि धीर री सजनी।
जै श्री हित हरि वंश मगन मन श्यामा, हरत मदन घन पीर री सजनी ॥


Shree Record
पद 25
आज नीकी बनी श्री राधिका नागरी ।
ब्रज-जुवति-जूथ में रूप अरु चतुरई, सील सिंगार गुन सबन तैं आगरी ॥
कमल दक्षिण भुजा, वाम भुज अंस सखि गावती सरस मिलि मधुर स्वर राग री
सकल विद्या विदित, रहसि हरिवंश हित, मिलत नव-कुञ्ज वर श्याम बड़भाग री ॥

Shree Record

पद 26

मोहनी मदन गोपाल की बाँसुरी ।
माधुरी श्रवन पुट,सुनत सुनि राधिके ! करत रतिराज के ताप कौ नासुरी ॥
सरद राका रजनि, विपिन वृन्दा सजनि, अनिल अति मंद सीतल सहित बासु री
परम पावन पुलिन, भ्रँग सेवित नलिन, कल्पतरु तीर बलवीर कृत रासु री ॥
सकल मंडल भलीं, तुम जु हरि सौं मिलीं, बनी वर बनित उपमा कहौं कासु री ।
तुम जु कंचन तनी, लाल मर्कत मनी, उभय कल हंस हरिवंश बलि दासु री ॥

पद 27

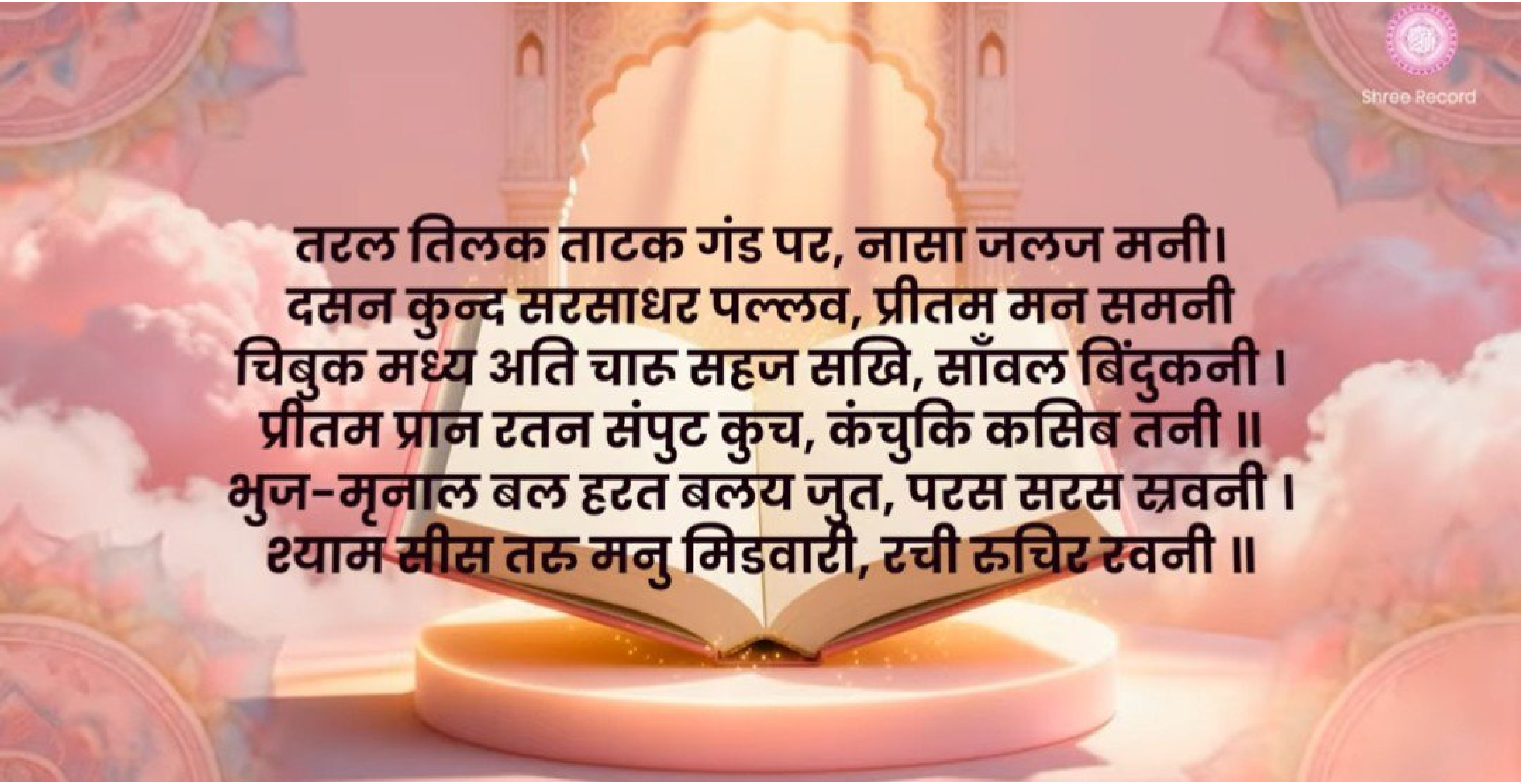
मधुऋतु वृन्दावन आनंद न थोर ।राजत नागरी नव कुशल किशोर ॥
जूथिका जुगल रूप मञ्जरी रसाल ।विथकित अलि मधु-माधवी गुलाल ॥
चंपक बकुल कुल विविध सरोज ।केतकी मेदिनी मद मुदित मनोज ॥
रोचक रूचिर बहै त्रिविध समीर |मुकुलित नूत नदत पिक-कीर ॥
पावन पुलिन घन मंजुल निकुञ्ज ।किसलय सैन रचित सुख-पुञ्ज ॥
मंजीर मुरज डफ मुरली मृदंग ।बाजत उपंग वीणा वर मुख चंग ॥
मृगमद मलयज कुमकुम अबीर ।बंदन अगरसत सुरंगित चीर ॥
गावत सुन्दरि-हरि सरस धमार ।पुलकित खग-मृग बहत न वारि ॥
(जैश्री) हित हरिवंश हंस हंसिनी समाज ।ऐसे ही करौ मिलि जुग -जुग राज ॥

पद 28

राधे देखि वन की बात ।
ऋतु बसन्त अनंत मुकुलित, कुसुम अरु फल पात ॥
वेनु धुनि नंदलाल बोली, सुनि व क्यौं अरसात ।
करत कतव विलम्ब भामिनि, वृथा औसर जात ॥
लाल मर्कतमनि छबीलौ, तुम जु कंचन गात ।
बनी श्रीहित हरिवंश जोरी, उभय गुन गन मात

पद 29

ब्रज नव तरुनि कदम्ब मुकुटमणि, श्यामा आजु बनी ।
नख शिख लौं अँग अंग माधुरी, मोहे श्याम धनी ॥
यौं राजत कवरी गूँथित कच, कनक कंज-वदनी
चिकुर चंद्रिकन बीच अर्ध बिधु, मानौं ग्रसित फनी ॥
सौभग रस सिर स्रवत पनारी, पिय सीमन्त ठनी ।
भृकुटि काम- कोदंड नैन-सर, कज्जल रेख अनी ॥

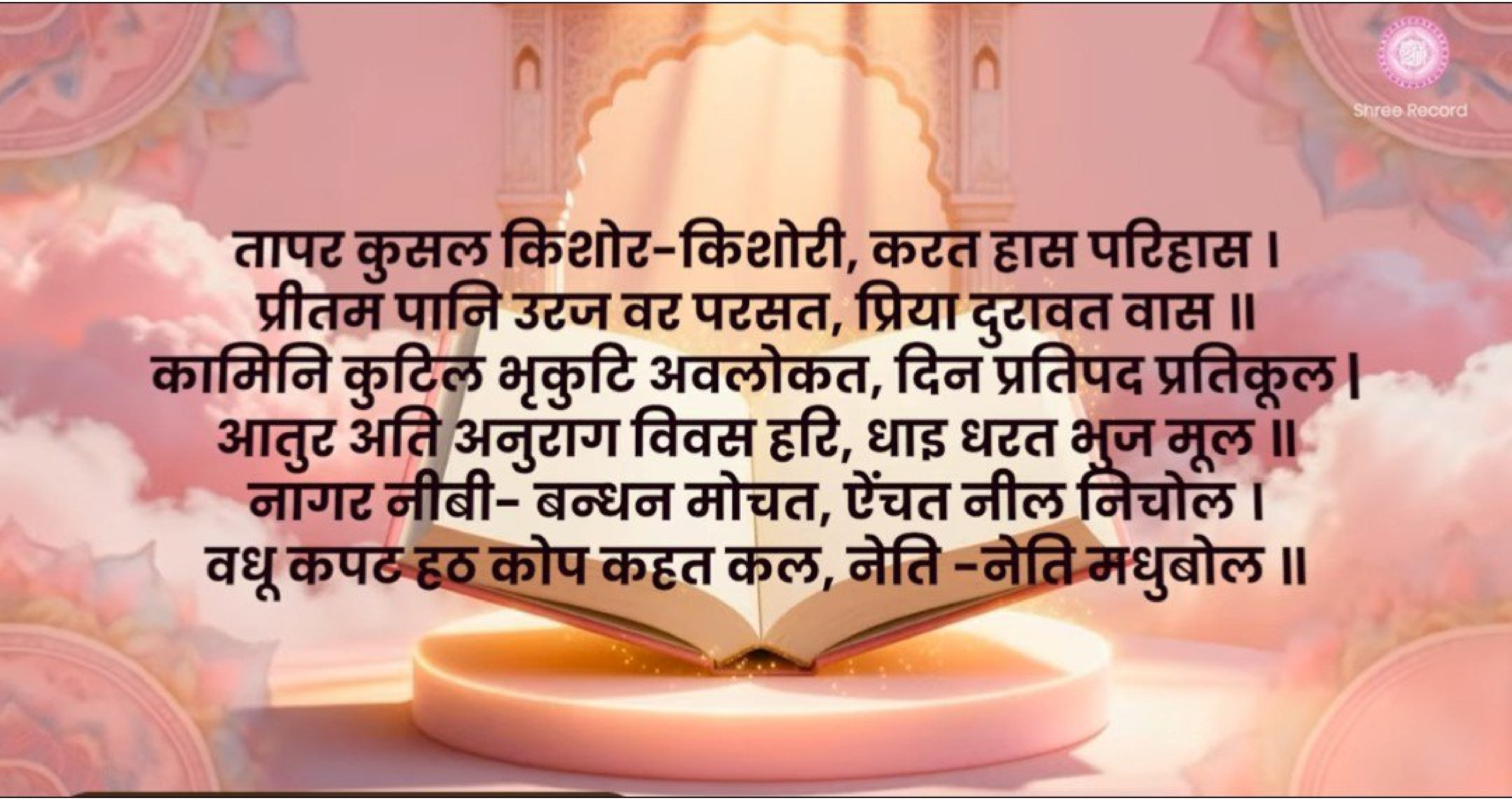


Shree Record
तरल तिलक ताटक गंड पर, नासा जलज मनी।
दसन कुन्द सरसाधर पल्लव, प्रीतम मन समनी
चिबुक मध्य अति चारु सहज सखि, साँवल बिंदुकनी ।
प्रीतम प्रान रतन संपुट कुच, कंचुकि कसिब तनी ॥
भुज-मृनाल बल हरत बलय जुत, परस सरस स्रवनी ।
श्याम सीस तरु मनु मिडवारी, रची रुचिर रवनी ॥


Shree Record
नाभि गंभीर मीन मोहन मन, खेलन कौं हृदनी ।
कृस कटि पृथु नितम्ब किंकिनि व्रत, कदलि-खंभ जघनी ॥
पद अम्बुज जावक जुत भूषन, प्रीतम उर अवनी ।
नव-नव भाय विलोभि भाम इभ, बिहरत वर करिनी ॥
(जैश्री) हित हरिवंश प्रसंसत श्यामा, कीरत विशद घनी ।
गावत स्रवनन सुनत सुखाकर, विश्व दुरित दवनी ॥
LISTEN NOW ON Spotify

पद 30

देखत नवनिकुञ्ज सुनि सजनी, लागत है अति चारु ।
माधविका केतकी लता लै, रच्यौ मदन आगारु ॥
सरद मास राका निशि सीतल मंद सुगन्ध-समीर ।
परिमल लुब्ध मधुब्रत विथकित, नदत कोकिला - कीर ॥
बहुविधि रंग मृदुल किसलय दल, निर्मित पिय सखि सेज ।
भाजन कनक विविध मधुपूरित, धरे धरनि पर हेज ॥


Shree Record
तापर कुसल किशोर-किशोरी, करत हास परिहास ।
प्रीतम पानि उरज वर परसत, प्रिया दुरावत वास ॥
कामिनि कुटिल भृकुटि अवलोकत, दिन प्रतिपद प्रतिकूल।
आतुर अति अनुराग विवस हरि, धाइ धरत भुज मूल ॥
नागर नीबी- बन्धन मोचत, ऐंचत नील निचोल ।
वधू कपट हठ कोप कहत कल, नेति -नेति मधुबोल ॥

परिरम्भन विपरित रति वितरत, सरस सुरत निजुकेलि ।
इन्द्रनील मनिमय तरु मानौं, लसत कनक की बेलि ॥
रतिरन मिथुन ललाट पटल पर, श्रमजल-सीकर संग ।
ललितादिक अंचल झकझोरत, मन अनुराग अभंग ॥
जै श्री हित हरिवंश यथामति बरनत, कृष्ण-रसामृत-सार ।
स्रवन सुनत प्रापक रति राधा, पद अम्बुज सुकुमार ॥

पद 31

आज अति राजत दम्पति भोर ।
सुरत रंग के रस में भीने, नागरि नवल किशोर ॥
अंसन पर भुज दिये विलोकत, इन्दुबदन विवि ओर ।
करत पान रस मत्त परस्पर, लोचन तृषित चकोर ॥
छुटी लटन लाल मन करष्यौ, ये याके चित चोर ।
परिरम्भन-चुम्बन मिल गावत, सुर मंदर कलघोर ॥
पग डगमगत चलत वन बिहरत, रुचिर कुञ्ज घनखोर ।
जै श्रीहित हरिवंश लाल ललना मिलि, हियौ सिरावत मोर ॥

पद 32

आजु वन क्रीड़त श्यामा श्याम ।
सुभग बनी निशि शरद चाँदनी, रूचिर कुञ्ज अभिराम ॥
खंडन अधर करत परिरम्भन, ऐंचत जघन दुकूल ।
उर नख-पात तिरीछी चितवन, दंपति रस समतूल ॥
वे भुज पीन पयोधर परसत, वामद्दशा पिय हार।
बसनन पीक अलक आकर्षत, समर स्रमित सतमार ॥
पल-पल प्रबल चौंप रस लम्पट, अति सुन्दर सुकुमार ।
(जैश्री)हित हरिवंश आजु तृण टूटत, हौं बलि विशद बिहार ॥

Shree Record

पद 33

आजु वन राजत जुगल किशोर ।
नँदनँदन वृषभानु नन्दिनी उठे उनींदे भोर ॥
डगमगात पग परत सिथिल गति, परसत नख-ससि छोर ।
दसन-वसन खंडित मषि मंडित, गंड तिलक कछु थोर ॥
दुरत न कच- करजन के रोके, अरून नैन अलि चोर ।
(जै श्री) हित हरिवंश संभार न तन-मन, सुरत समुद्र झकोर ॥

पद 34

वन की कुञ्जन-कुञ्जन डोलन ।
निकसत निपट साँकरी बीथिन, परसत नाहि निचोलन ॥
प्रात काल रजनी सब जागे, सूचत सुख हग लोलन ।
आलसवन्त अरूण अति व्याकुल, कछु उपजत गति गोलन ॥
निर्तन भृकुटि बदन अम्बुज मृदु, सरस हास मधु बोलन ।
अति आसक्त लाल अलि लम्पट, बस कीने बिनु मोलन ॥
बिलुलित सिथिल श्याम छूटी लट, राजत रूचिर कपोलन ।
रति विपरित चुम्बन परिरम्भन, चिबुक चारु टक टोलन ॥
कबहुँ स्रमित किसलय सिज्या पर, मुख अंचल झक झोलन ।
दिन हरिवंश दासि हिय सींचत, वारिध केलि कलोलन ॥

पद 35

झूलत दोऊ नवल किशोर ।
रजनी जनित रंग सुख सूचत, अंग-अंग उठि भोर ॥
अति अनुराग भरे मिलि गावत, सुर मंदर कल घोर ।
बीच-बीच प्रीतम चित चोरत, प्रिया नैन की कोर ॥
अबला अति सुकुमार डरत मन, वर हिंडोर झकोर ।
पुलकि पुलकि प्रीतम उर लागत, दै नव उरज अँकोर ।
अरुझी विमल माल कंकन सौं, कुंडल सौं कच डोर ।
वेपथ जुत क्यौं बनैं विवेचत, आनंद बढ्यो न थोर ॥
निरखि- निरखि फूलत ललितादिक,विवि मुख चन्द्र चकोर ।
दै असीस हरिवंश प्रसंसत, करि अंचल की छोर ॥

पद 36

आज वन नीकौ रास बनायौ ।
पुलिन पवित्र सुभग यमुना तट, मोहन बेनु बजायौ ॥
कल कंकन किंकिनि नूपुर धुनि, सुनि खग-मृग सचु पायौ ।
जुवतिनु मण्डल मध्य श्याम घन, सारंग राग जमायौ ॥
ताल मृदंग उपंग मुरज डफ, मिलि रस सिन्धु बढ़ायौ ।
विविध विसद वृषभानुनन्दिनी, अंग सुधंग दिखायौ ।
अभिनय- निपुन लटकि लट लोचन, भृकुटि अनंग नचायौ
ताताथेई ताथेई धरत नूतन गति, पति ब्रजराज रिझायौ
सकल उदार नृपति चूडामणि, सुख-वारिद बरसायौ
परिरम्भन चुम्बन आलिंगन, उचित जुवतिजन पायौ
बरसत कुसुम मुदित नभनायक, इन्द्र निसान बजायौ
जैश्री हित हरिवंश रसिक राधापति,जस-वितान जग छायौ

पद-37

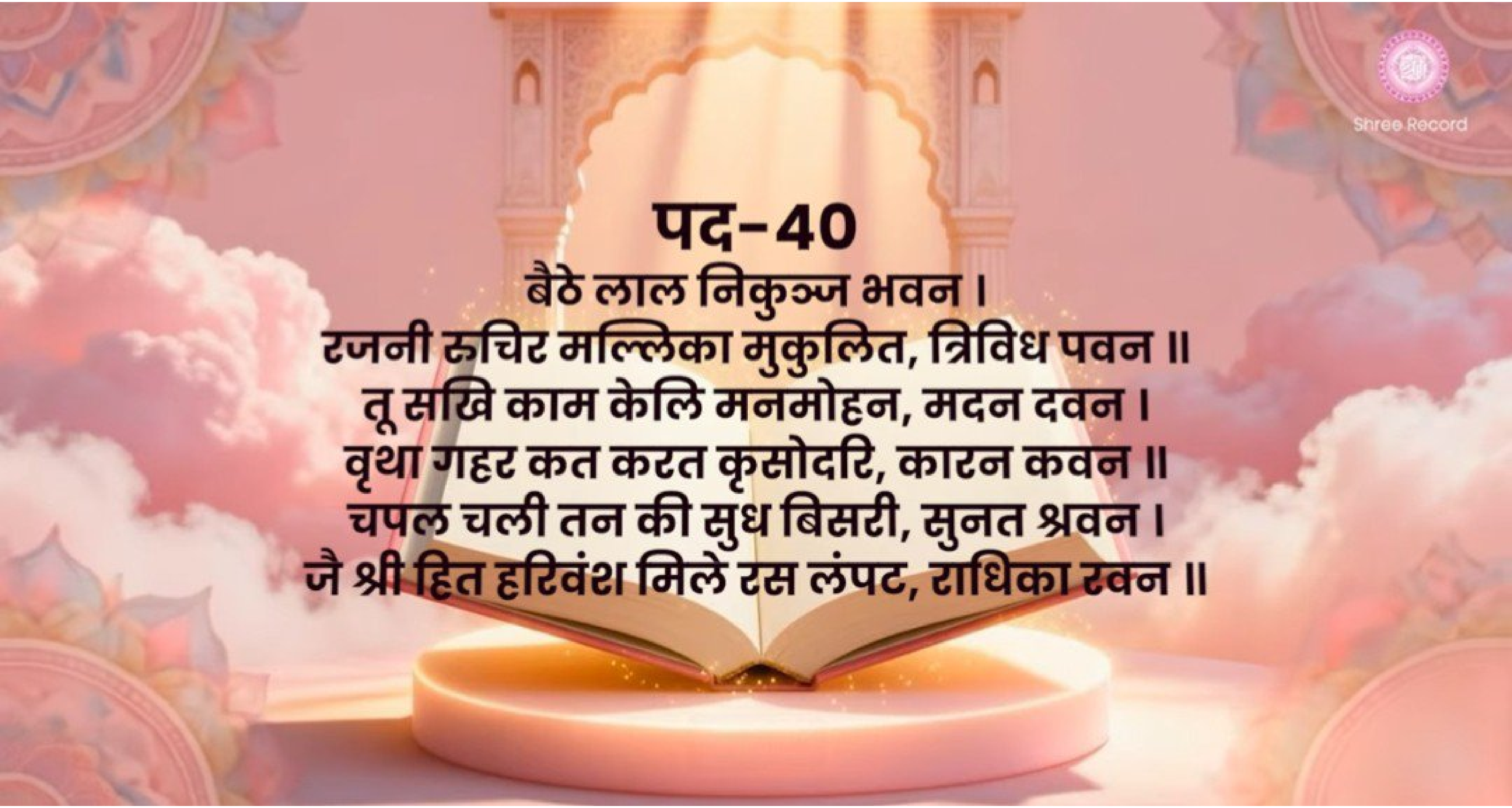
चलहि किन मानिनि कुञ्ज कुटीर ।
तो बिनु कुँवर कोटि बनिता जुत, मथन मदन की पीर ॥
गद-गद सुर विरहाकुल पुलकित, स्रवत बिलोचन नीर ।
क्वासि क्वासि वृषभानु नन्दिनी, बिलपत विपिन अधीर ॥
वंशी विसिख व्याल मालावलि, पंचानन पिक कीर ।
मलयज गरल हुतासन मारुत, साखामृग रिपु चीर ॥
जैश्री हित हरिवंश परम कोमल चित,चपल चली पिय तीर
सुनि भयभीत बज्र को पंजर, सुरत सूर रणधीर ॥

पद-38

बेगि चलहि उठि गहर करत कत, निकुञ्ज बुलावत लाल ।
हा राधा-राधिका पुकारत, निरखि मदन गज ढाल ॥
करत सहाय शरद शशि मारुत, फूटि मिली उर माल ।
दुर्गम तकत समर अति कातर, करहि न पिय प्रतिपाल ॥
जै श्री हित हरिवंश चली अति आतुर, स्रवन सुनत तेहि काल ।
लै राखे गिरि कुच बिच सुन्दर, सुरत-सूर ब्रजबाल ॥

पद-39

खेल्यौ लाल चाहत रवन ।
रचि-रचि अपने हाथ संवारयौ , निकुञ्ज भवन ॥
रजनी सरद मंद सौरभ सौं, सीतल पवन ।
तो बिनु कुँवरि काम की वेदन, मेटव कवन ॥
चलहि न चपल बाल-मृगनैंनी, तजिव मवन ।
जै श्री हित हरिवंश मिलव प्यारे की,आरति-दवन ॥


Shree Record
पद-40
बैठे लाल निकुञ्ज भवन ।
रजनी रुचिर मल्लिका मुकुलित, त्रिविध पवन ॥
तू सखि काम केलि मनमोहन, मदन दवन ।
वृथा गहर कत करत कृसोदरि, कारन कवन ॥
चपल चली तन की सुध बिसरी, सुनत श्रवन ।
जै श्री हित हरिवंश मिले रस लंपट, राधिका रवन ॥

पद-41

प्रीति की रीति रंगीलौई जानै ।
जद्यपि सकल लोक चूड़ामणि, दीन अपनपौ मानै ॥
यमुना पुलिन निकुंज भवन में, मान मानिनी ठानै ।
निकट नवीन कोटि कामिनि कुल, धीरज मनहि न आनै ॥
नस्वर नेह चपल मधुकर ज़्यौं , आन-आन सौं बाँनै ।
जै श्री हित हरिवंश चतुर सोई लालहिं, छाँडी मैड पहिचानै ॥

Shree Record

पद-42

प्रीति न काहू की कानि विचारै।
मारग अपमारग विथकित मन, को अनुसरत निवारै।।
ज्यौं सरिता सावन जल उमगत, सनमुख सिन्धु सिधारै।
ज्यौं नादहि मन दिये कुरंगन, प्रगट पारधी मारे।।
जै श्री हित हरिवंश हिलग सारंग ज्यौं, सलभ सरीरहि जारै।
नायक निपुन नवल मोहन बिनु, कौन अपनपौ हारै।।

पद-43

अति नागरि वृषभानु किशोरी।
सुन दूतिका चपल मृगनैनी, आकर्षत चितवत चित गोरी।।
श्रीफल उरज कंचन-सी देही, कटि केहरि गुण-सिंधु-झकोरी।
बैनी भुजंग चन्द्रसत बदनी, कदलि जंघ जलचर गति चोरी।।
सुनि हरिवंश आज रजनी-मुख, बन मिलाइ मेरी निज जोरी।
जद्यपि मान समेत भामिनी, सुनि कत रहत भली जिय भोरी।।

पद-44

चली सुन्दरी बोली वृन्दावन।
कामिनि कण्ठ लागि किन राजहि, तू दामिनि मोहन नूतन घन।
कंचुकि सुरंग विविध रंग सारी , नख-जुग-ऊन बने तेरे तन।।
ये सब उचित नवल मोहन कौं, श्रीफल कुच जोवन आगम-धन।
अतिसय प्रीति हुति अन्तर गति, जै श्री हित हरिवंश चली मुकुलित मन।
निविड़ निकुंज मिले रस-सागर, जीते सत रतिराज सुरत रन ।।

पद-45

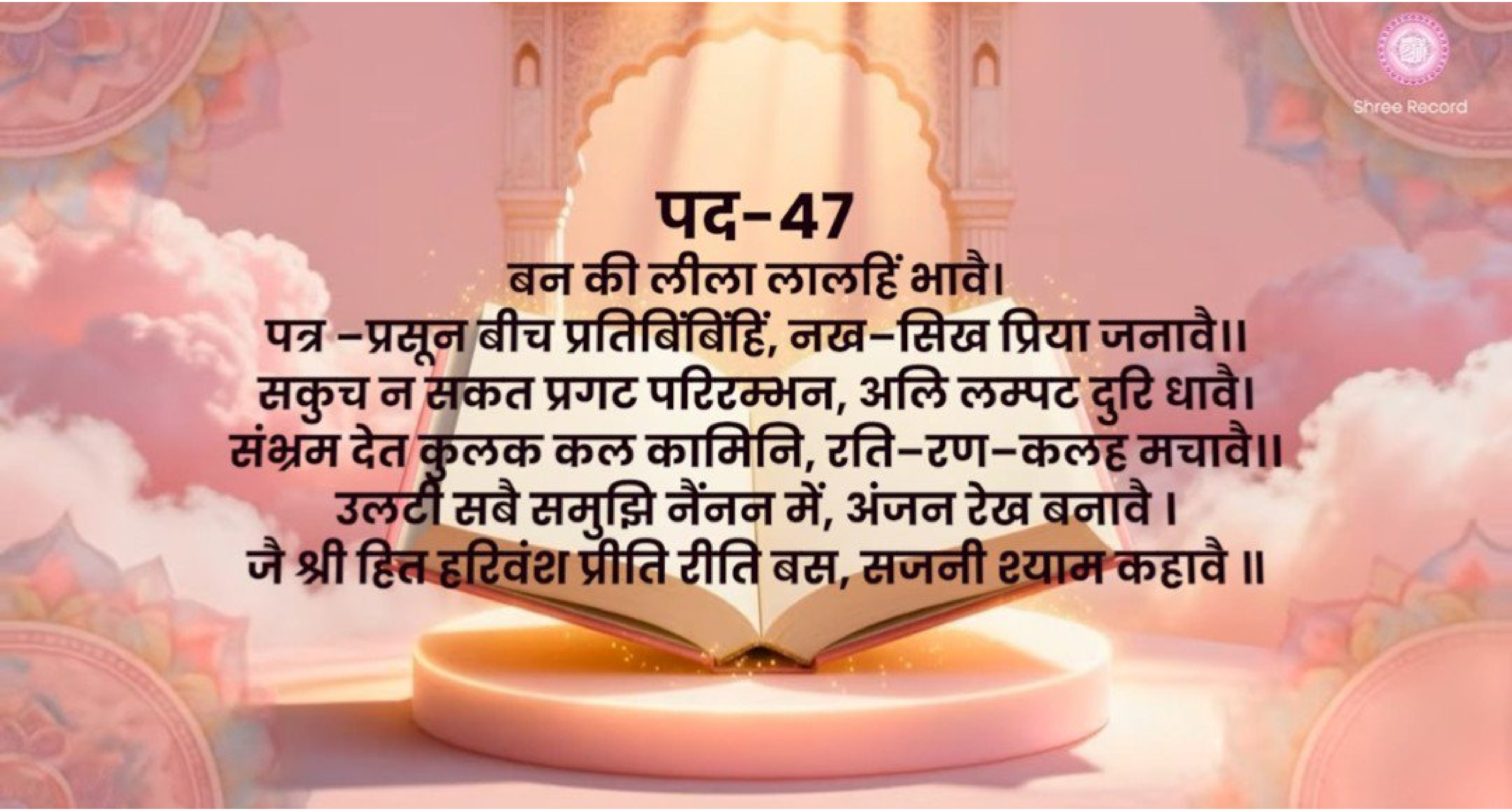
आवत श्रीवृषभानु दुलारी।
रूप-रासि अति चतुर-शिरोमणि, अंग-अंग सुकुमारी।।
प्रथम उबटि मज्जन करि सज्जित, नील-बरन तन सारी।
गूँथित अलक तिलक क्रत सुन्दर, सैंदुर माँग संवारी।।
मृगज समान नैन अंजन जुत, रचिर रेख अनुसारी।

पद-45

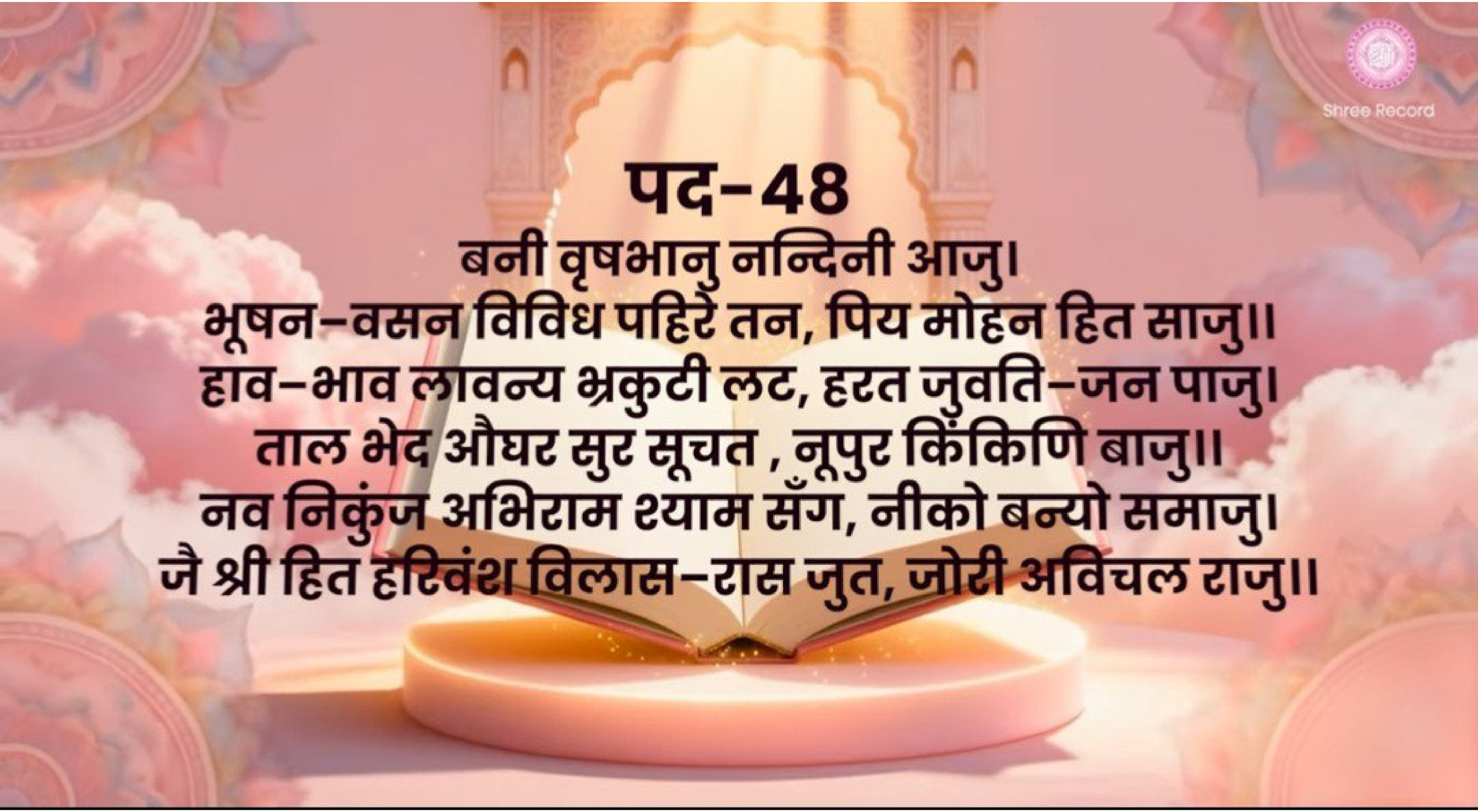
जटित लवंग ललित नासा पर, दसनावली क्रत कारी।
श्रीफल उरज कसूँभी कंचुकि कसि, ऊपर हार छबि न्यारी।
क्रस कटि उदर गंभीर नाभिपुट, जघन नितम्बन भारी।
मनौं म्रनाल भूषन भूषित भुज श्याम अंस पर डारी।
जै श्री हित हरिवंश जुगल करिनी–गज बिहरति वन पिय प्यारी।।

पद-46

विपिन घन कुंज रति केलि भुज मेलि रुचि,
श्याम-श्यामा मिले शरद की जामिनि
हृदै अति फूल सम तूल पिय नागरी,
करिनि-करि मत्त मनौं विविध गुण रामिनि।।
सरस गति हास-परिहास आवेस बस,
दलित दल मदन-बल कोक रस कामिनि।
जै श्री हित हरिवंश सुनि लाल लावन्य भिदे,
प्रिया अति सूर सुख सुरत संग्रामिनि।।



Shree Record
पद-47
बन की लीला लालहिं भावै।
पत्र -प्रसून बीच प्रतिबिंबिंहिं, नख-सिख प्रिया जनावै।।
सकुच न सकत प्रगट परिरम्भन, अलि लम्पट दुरि धावै।
संभ्रम देत कुलक कल कामिनि, रति-रण-कलह मचावै।।
उलटी सबै समुझि नैंनन में, अंजन रेख बनावै ।
जै श्री हित हरिवंश प्रीति रीति बस, सजनी श्याम कहावै ॥


Shree Record
पद-48
बनी वृषभानु नन्दिनी आजु।
भूषन-वसन विविध पहिरे तन, पिय मोहन हित साजु।।
हाव-भाव लावन्य भ्रकुटी लट, हरत जुवति-जन पाजु।
ताल भेद औघर सुर सूचत , नूपुर किंकिणि बाजु।।
नव निकुंज अभिराम श्याम सँग, नीको बन्यो समाजु।
जै श्री हित हरिवंश विलास-रास जुत, जोरी अविचल राजु।।

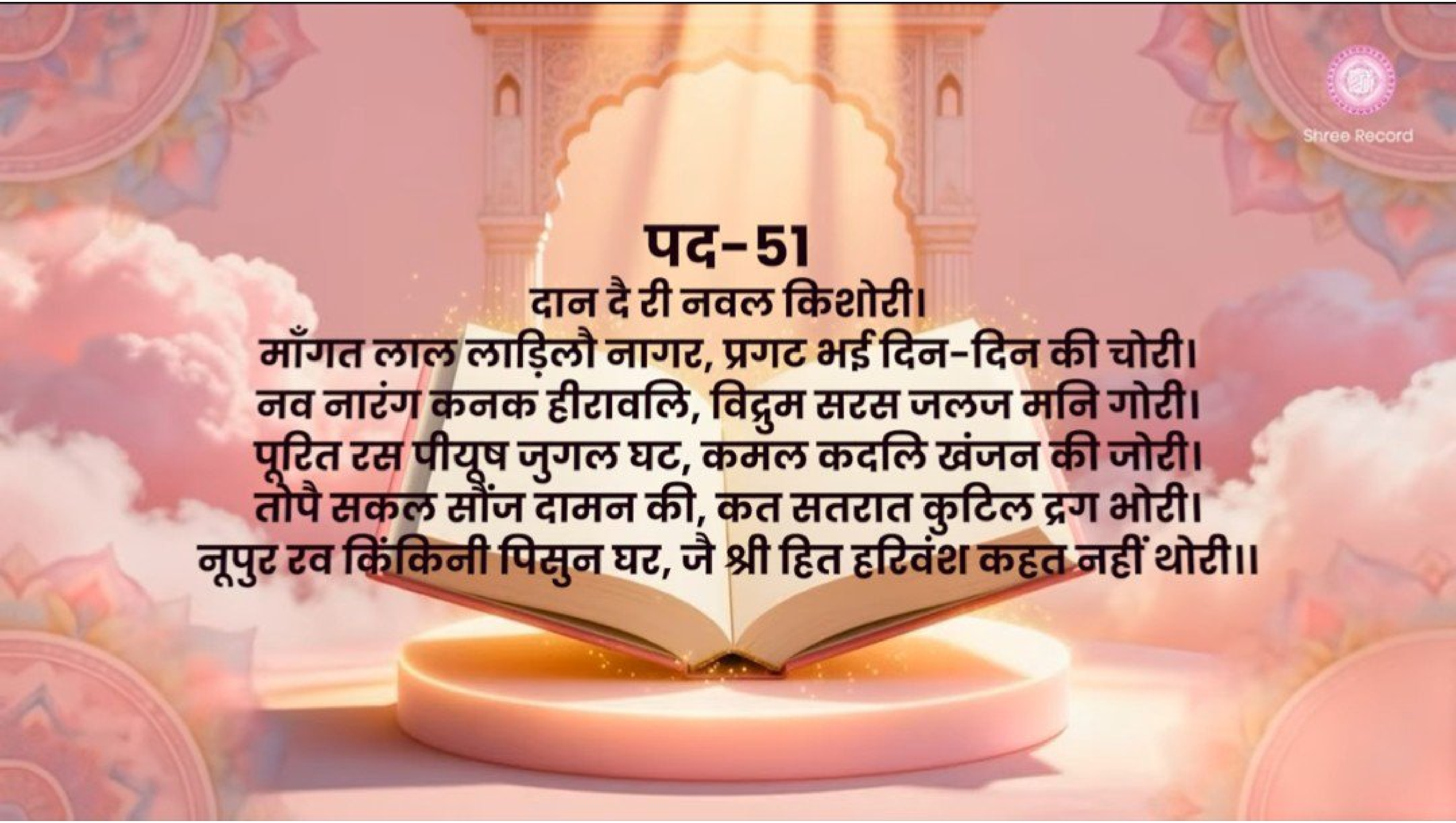
पद-49

देख सखी राधा पिय केलि।
ये दोऊ खोरि खिरक गिरि गहवर, बिहरत कुँवर कंठ भुज मेलि।।
ये दोऊ नवलकिशोर रूप निधि, विटप तमाल कनक मनौं बेलि।
अधर अदन चुम्बन-परिरम्भन, तन पुलकित आनन्द रस झेलि।।
पट-बंधन कंचुकी कुच परसत, कोप कपट निरखत कर पेलि।
जै श्री हित हरिवंश लाल रस लम्पट, धाइ धरत उर बीच सकेलि।।

पद-50

नवलनागरि नवलनागर किशोर मिलि, कुंज कोमल कमल दलन सिज्या रची।
गौर-साँवल अंग रुचिर तापर मिले, सरस मनि नील मनों मृदुल कंचन खची।।
सुरत नीवी निबन्ध हेतु प्रिय मानिनी, प्रिया की भुजनि में कलह मोहन मची।।
सुभग श्रीफल उरज पानि परसत रोष, हुंकार गर्व द्रग-भंगी भामिनी लची।
कोक कोटिक रभस रहसि हरिवंश हित, विविध कल माधुरी किमपि नाहिन बची।।
प्रणयमय रसिक ललितादि लोचन चषक, पिवत मकरंद सुख-रासि अंतर सची।।

Shree Record


Shree Record
पद-51
दान दै री नवल किशोरी।
माँगत लाल लाड़िलौ नागर, प्रगट भई दिन-दिन की चोरी।
नव नारंग कनक हीरावलि, विद्रुम सरस जलज मनि गोरी।
पूरित रस पीयूष जुगल घट, कमल कदलि खंजन की जोरी।
तोपै सकल सौंज दामन की, कत सतरात कुटिल द्रग भोरी।
नूपुर रव किंकिनी पिसुन घर, जै श्री हित हरिवंश कहत नहीं थोरी।।

पद-52

देखो माई, सुन्दरता की सीवाँ।
ब्रज नव तरुनि कदंब नागरी, निरखि करत अधग्रीवाँ।।
जो कोउ कोटि कलप लगि जीवै, रसना कोटिक पावै।
तऊ रुचिर वदनारविंद की, शोभा कहत न आवै।।
देव-लोक भू-लोक रसातल, सुनि कवि-कुल मति डरिये।
सहज माधुरी अंग-अंग की, कहि कासौं पटतरिए ।।
जै श्री हित हरिवंश प्रताप रूप गुण, वय बल श्याम उजागर।
जाकी भ्रू -विलास बस पशुरिव, दिन विथकित रस सागर।।

पद-53

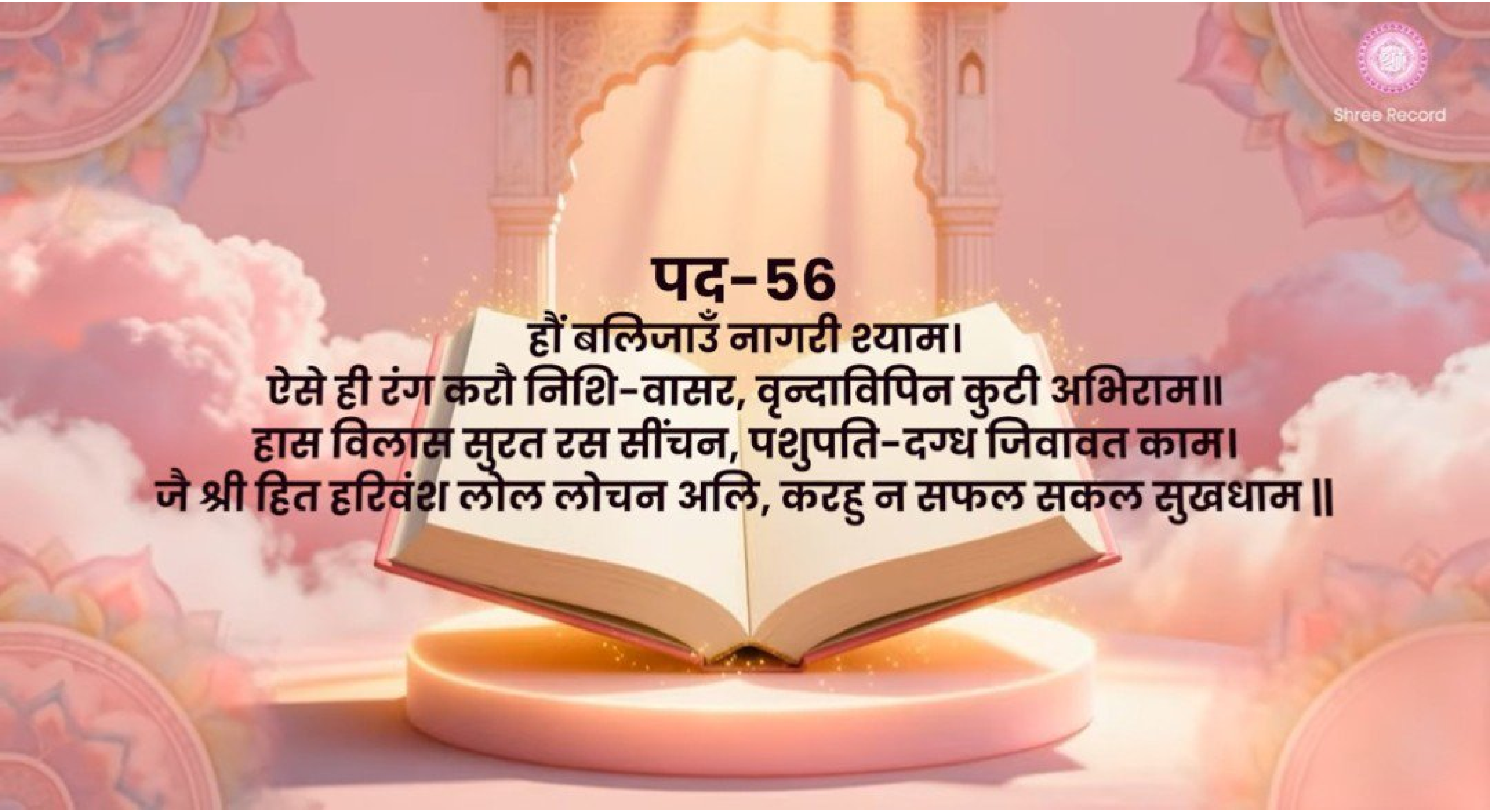
देखौ माई अबला कै बल-रासि।
अति गज मत्त निरंकुश मोहन, निरखि बँधे लट-पासि।।
अब ही पंगु भई मन की गति, बिनु उद्यिम अनियास।
तब की कहा कहौं जब पिय प्रति, चाहत भ्रकुटि विलास।।
कच संजमन व्याज भुज दरसत, मुसिकन वदन विकास।
हा हरिवंश अनीत रीत हित, कत डारत तन त्रास।।

पद-54

नयौ नेह नव रंग नयौ रस, नवल श्याम वृषभानु किशोरी।
नव पीताम्बर नवल चूनरी, नई-नई बूँदन भीजत गोरी।।
नव वृन्दावन हरित मनोहर, नव चातक बोलत मोर-मोरी।
नव मुरली जु मलार नई गति, स्रवन सुनत आये घनघोरी।।
नव भूषण नव मुकुट बिराजत, नई-नई उरप लेत थोरी-थोरी।
जै श्रीहित हरिवंश असीस देत मुख, चिर जीवो भूतल यह जोरी।।

पद-55

आजु दोऊ दामिनि मिलि बहसी।
बिच लै श्याम घटा अति नूतन, ताके रंग रसी।।
एक चमकि चहुँ ओर सखी री, अपने सुभाय लसी।
आई एक सरस गहनी में, दुहूँ भुज बीच बसी।।
अम्बुज नील उभर विधु रजत, तिनकी चलन खसी।
जै श्रीहित हरिवंश लोभ भेंटन मन, पूरन सरद ससी।।


Shree Record
पद-56
हौं बलिजाउँ नागरी श्याम।
ऐसे ही रंग करौ निशि-वासर, वृन्दाविपिन कुटी अभिराम॥
हास विलास सुरत रस सींचन, पशुपति-दग्ध जिवावत काम।
जै श्री हित हरिवंश लोल लोचन अलि, करहु न सफल सकल सुखधाम ॥

पद-57

प्रथम यथामति प्रणऊँ, श्रीवृन्दावन अति रम्य।
श्रीराधिका कृपा बिनु, सबके मनन अगम्य॥
वर यमुनाजल सींचन, दिनहीं सरद-बसंत।
विविध भाँति सुमनस के, सौरभ अलि-कुल मंत॥
अरुन नूत पल्लव पर, कूजत कोकिल कीर।
निरतन करत सिखीकुल, अति आनन्द अधीर॥
बहत पवन रुचिदायक, शीतल-मंद सुगंधु।
अरुन-नील-सित मुकुलित, जहाँ तहाँ पूषन-बंधु॥

पद-57

अति कमनीय विराजत, मन्दिर नवल निकुंज।
सेवत सगन प्रीतिजुत, दिन मीनध्वज-पुंज॥
रसिक-रासि जहाँ खेलत, श्यामा-श्याम किशोर।
उभै बाहु परिरंजित, उठे उनींदे भोर॥
कनक कपिस पट शोभित, सुभग साँवरे अंग।
नील वसन कामिनि उर, कंचुकी करूँभी सुरंग॥
ताल रबाब मुरज डफ, बाजत मधुर मृदंग।
सरस उक्ति-गति सूचत, वर बाँसुरी मुख चंग॥

पद-57

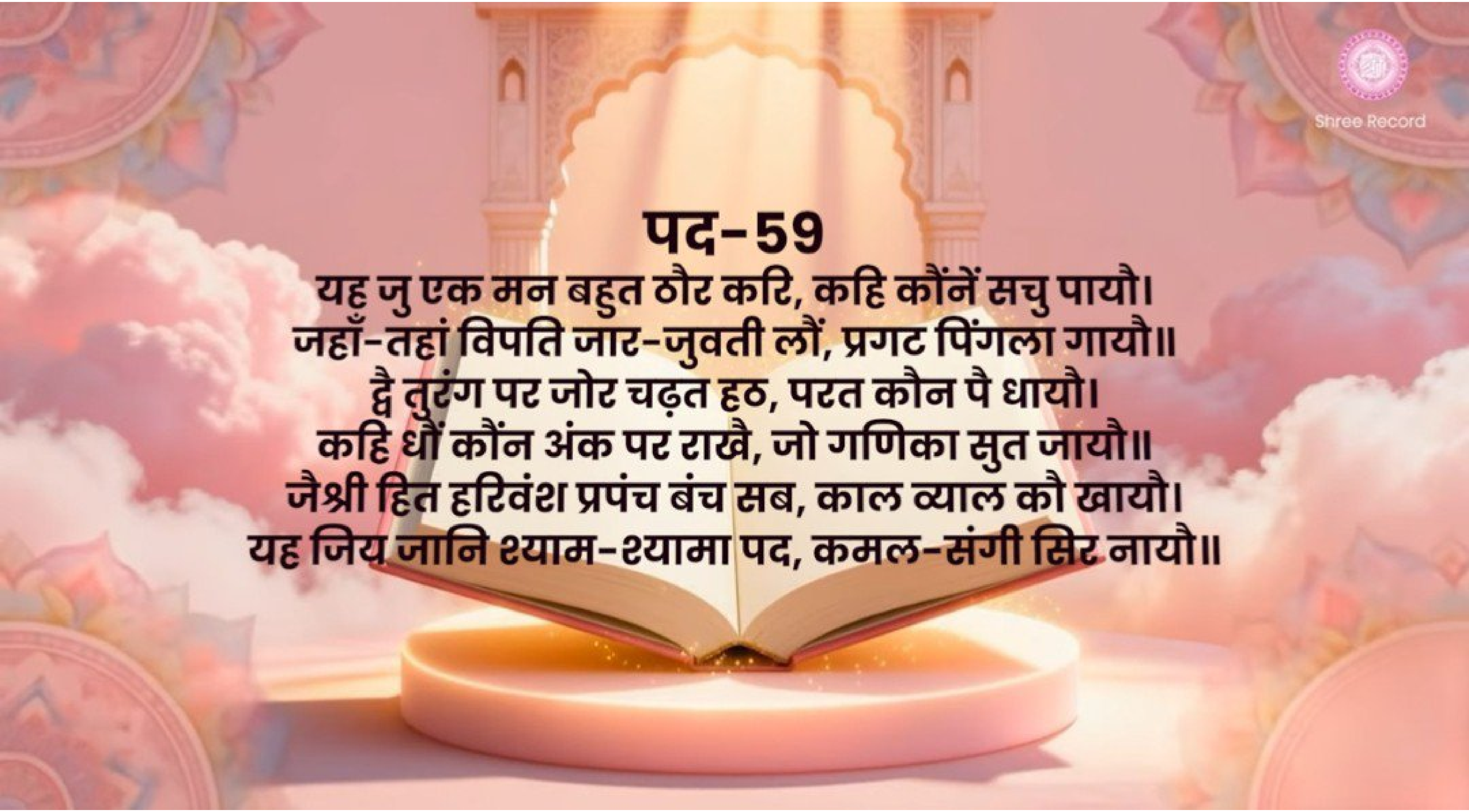
दोऊ मिली चाँचर गावत, गौरी राग अलाप।
मानस-मृग बल बेधत, भ्रकुटि धनुष द्रग चाँप ॥
दोऊ कर तारिनु पटकत, लटकत इत उत जात।
हो-हो-होरी बोलत, अति आनन्द कुलकात॥
रसिक लाल पर मेलत, कामिनि बँदन धूरि।
पिय पिचकारिनु छिरकत, तकि-तकि कुमकुम पूरि॥
कबहुँ-कबहुँ चन्दन तरु, निर्मित तरल हिंडोल।
चढ़ि दोऊ जन झूलत, फूलत करत कलोल॥

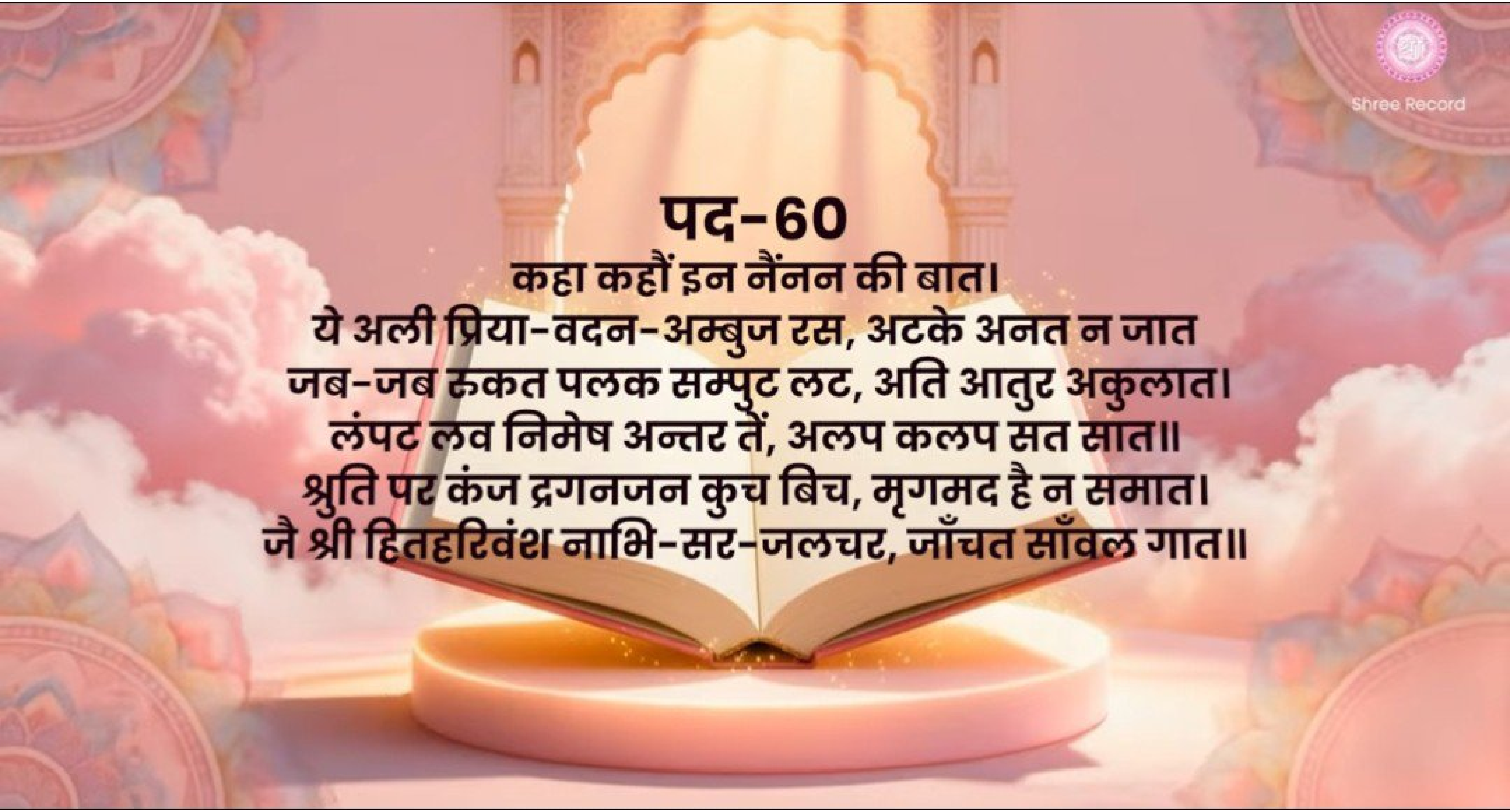
पद-57

वर हिंडोल झकोरन, कामिनि अधिक डरात।
पुलकि-पुलकि वेपथ अंग, प्रीतम उर लपटात॥
हित चिंतक निज-चेरिनु, उर आनन्द न समात।
निरखि निपट नैंनन सुख, तृण तोरत बलि जात॥
अति उदार विवि सुन्दर, सुरत सूर सुकुमार।
जै श्री हित हरिवंश करौ दिन, दौऊ अचल विहार॥

पद-58

तेरे हित लैन आई, वन तें श्याम पठाई, हरत कामिनि घन कदन काम कौ॥
काहे कौं करत बाधा, सुन री चतुर राधा, भेटि कैं मेटि री माई प्रगट जगत भौ॥
देखि री रजनी नीकी, रचना रुचिर पी की, पुलिन नलिन नभ उदित रोहिनी-धौ॥
तू तौअव सखी सयानी, तैं मेरी एकौं न मानी, हौं तोसौं कहत हारी जुवति जुगति सौं॥
मोहन लाल छबीलौ, अपने रंग रंगीलौ, मोहत बिहंग पशु मधुर मुरली रौ॥
ते तौअव गनत तन जीवन जोवन तव, जै श्री हित हरिवंश हरि भजहि भामिनि जौ ॥


Shree Record
पद-59
यह जु एक मन बहुत ठौर करि, कहि कौंनें सचु पायौ।
जहाँ-तहां विपति जार-जुवती लौं, प्रगट पिंगला गायौ॥
द्वै तुरंग पर जोर चढ़त हठ, परत कौन पै धायौ।
कहि धौं कौंन अंक पर राखै, जो गणिका सुत जायौ॥
जैश्री हित हरिवंश प्रपंच बंच सब, काल व्याल कौ खायौ।
यह जिय जानि श्याम-श्यामा पद, कमल-संगी सिर नायौ॥


Shree Record
पद-60
कहा कहौं इन नैंनन की बात।
ये अली प्रिया-वदन-अम्बुज रस, अटके अनत न जात
जब-जब रुकत पलक सम्पुट लट, अति आतुर अकुलात।
लंपट लव निमेष अन्तर तें, अलप कलप सत सात॥
श्रुति पर कंज द्रगनजन कुच बिच, मृगमद है न समात।
जै श्री हितहरिवंश नाभि-सर-जलचर, जाँचत साँवल गात॥

Shree Record

पद-61

आजु सखी वन में जु बने प्रभु, नाचत हैं ब्रजमंडन।
वैस किशोर जुवति अंसन पर, दिये विमल भुज दंडन ।।
कोमल कुटिल अलक सुठि शोभित, अवलम्बित युग गंडन ।
मानहुँ मधुप थकित रस-लम्पट, नील कमल के खंडन ।।
हास-विलास हरत सबकौ मन, काम समूह विहंडन ।
जै श्री हित हरिवंश करत अपनौं जस, प्रगट अखिल ब्रह्मांडन।।

पद-62

खेलत रास दुलहिनी दुलहु।
सुनहु न सखी सहित ललितादिक,निरिखि-निरिखि नैंनन किन फूलहु।।
अति कल मधुर महा मोहन धुनि,उपजत हंस सुता के कूलहु।
थेई-थेई वचन मिथुन मुख निसरत,सुनि-सुनि देह दशा किन भूलहु।।
म्रदु पदन्यास उठत कुंकुम रज, अद्भुत बहत समीर दुकूलहु।
कबहु श्याम श्यामा दसनांचल, कच-कुच हार छुवत भुजमूलहु।।
अति लावन्य रूप अभिनय गुन, नाहिन कोटि काम समतूलहु।
भृकुटि विलास हास रस बरसत, जै श्री हित हरिवंश प्रेम रस झूलहु।।

पद-63

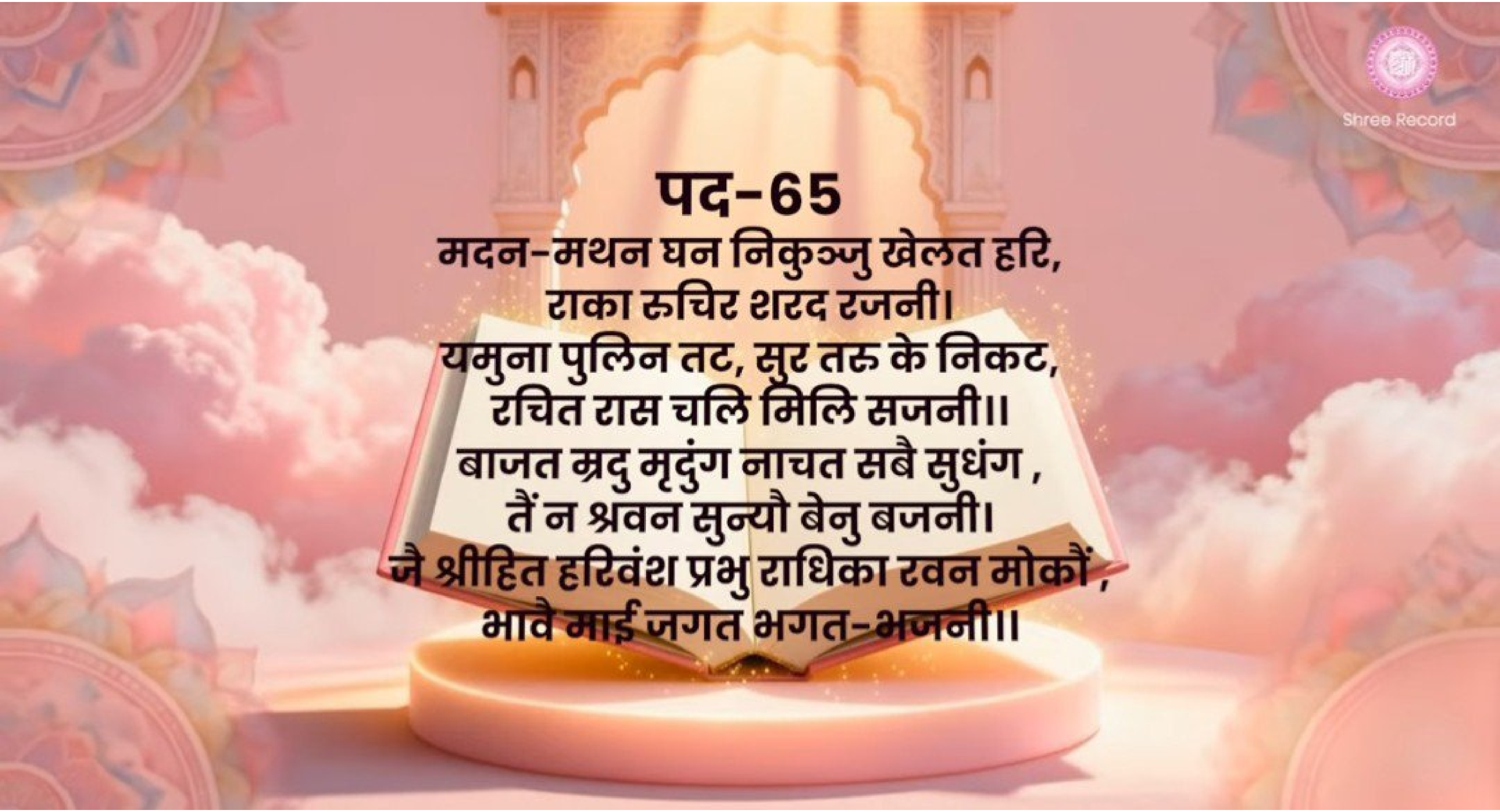
मोहन मदन त्रिभंगी। मोहन मुनि-मन-रंगी।
मोहन मुनि सघन प्रगट परमानन्द, गुण गम्भीर गुपाला।
सीस किरीट श्रवण मणि-कुण्डल, उर मण्डित वनमाला।।
पीताम्बर तन-धातु विचिलित, कल किङ्किणि कटि चंगी।
नख-मणि तरनि चरन सरसीरुह, मोहन मदन त्रिभंगी।।
मोहन बेनु बजावै। इहि रव नारि बुलावै।
आई ब्रज नारि सुनत वंशी-रव, गृह पति बंधु बिसारे।
दरसन मदन गुपाल मनोहर, मनसिज ताप निवारे।।
हरषित वदन बंक अवलोकन, सरस मधुर धुनि गावै।
मधुमय श्याम समान अधर धरि, मोहन बेनु बजावै।।

पद-63

रास रच्यौ वन माहिं। विमल कलपतरू छाहिं।
विमल कलपतरू तीर सुपेसल, शरद रैन वर चन्दा।
शीतल-मंद-सुगंध पवन बहै, तहाँ खेलत नंदनन्दा।।
अद्‌भुत ताल मृदंग मनोहर, किंकिनि शब्द कराहीं।
यमुना पुलिन रसिक रस-सागर, रास रच्यौ वन माहीं।।
देखत मधुकर केलि। मोहे खग मृग बेलि।
मोहे मृग-धेनु सहित सुर-सुन्दरी, प्रेम मगन पट छूटे।
उड़गन चकित थकित शशिमंडल, कोटि मदन मन लूटे।।
अधर पान परिरंभन अति रस, आनन्द मगन सहेली।
जै श्री हित हरिवंश रसिक सचु पावत, देखत मधुकर केलि।।

पद-64

बेनु माई बाजै वंशीवट।
सदा बसंत रहत वृन्दावन, पुलिन पवित्र सुभग यमुना तट।।
जटित क्रीट मकराकृत कुण्डल, मुख अरविन्द भँवर मानों लट।
दसनन कुंद कली छबि लज्जित, सज्जित कनक समान पीत पट।।
मुनि मन ध्यान धरत नहीं पावत, करत विनोद संग बालक भट।
दास अनन्य भजन रस कारन, जै श्री हित हरिवंश प्रगट लीला नट।।


Shree Record
पद-65
मदन-मथन घन निकुञ्जु खेलत हरि,
राका रुचिर शरद रजनी।
यमुना पुलिन तट, सुर तरु के निकट,
रचित रास चलि मिलि सजनी।।
बाजत म्रदु मृदुंग नाचत सबै सुधंग ,
तैं न श्रवन सुन्यौ बेनु बजनी।
जै श्रीहित हरिवंश प्रभु राधिका रवन मोकौं ,
भावै माई जगत भगत-भजनी।।

पद-66

बिहरत दोऊ प्रीतम कुंज।
अनुपम गौर-श्याम तन शोभा, वन बरसत सुख पुंज।।
अद्भुत खेत महा मनमथ कौ , दुंदुभि भूषन-राव।
जूझत सुभट परस्पर अँग-अँग, उपजत कोटिक भाव।।
भर संग्राम स्रमित अति अबला, निद्रायत कल नैंन।
पिय के अंक निसंक तंक तन, आलस जुत क्रत सैन।।
लालन मिस आतुर पिय परसत, ऊरु नाभि उरजात।
अद्भुत छटा विलोकि अवनि पर, विथकित वेपथ गात।।
नागरि निरिखि मदन-विष व्यापत, दियौ सुधाधर धीर।
सत्वर उठे महा मधु पीवत, मिलत मीन मिव नीर।।

पद-66

अबही मैं मुख मध्य बिलोके, बिंबाधर सु रसाल।
जाग्रत ज्यौं भ्रम भयौ पर्यौं मन, सत मनसिज कुल जाल।।
सक्रदपि मयि अधरामृत मुपनय, सुन्दरि सहज सनेह।
तव पद-पंकज कौ निज मन्दिर, पालय सखि मम देह।।
प्रिया कहत कहु कहाँ हुते पिय, नवनिकुञ्ज-वर-राज।
सुन्दर वचन रचन कत बितरत, रति-लंपट बिनु काज।।
इतनौं श्रवन सुनत मानिनि मुख, अन्तर रहौ न धीर।
मति कातर विरहज दुख व्यापत, बहुतर स्वाँस समीर।।
जै श्री हित हरिवंश भुजन आकर्षे, लै राखे उर माँझ।
मिथुन मिलत जु कछुक सुख उपज्यो , त्रुटि लवमिव भई साँझ।।

पद-67

रुचिर राजत वधू कानन किशोरी।।
सरस सोडस किये तिलक मृगमद दिये, मृगज लोचन उबटि अंग शिर खोरी।।
गंड पंडीर मंडित चिकुर चंद्रिका, मेदिनी कवरि गूँथित सुरंग डोरी।
श्रवन ताटंक कै चिबुक पर बिंदु दै, कसूँभी कंचुकि दुरे उरज फल कोरी।।
बलय कंकन दोत नखन जावक जोत, उदर गुन रेख, पट नील, कटि थोरी।
सुभग जघन स्थली कुनित किंकिनि भली, कोक संगीत रस-सिंधु झक झोरी।।
विविध लीला रचित रहसि हरिवंश हित, रसिक सिरमौर राधा रवन जोरी।
भृकुटि निर्जित मदन मंद सस्मित् वदन, किये रस विवस घन श्याम पिय गोरी।।

पद-68

राास में रसिक मोहन बने भामिनी ।
सुभग पावन पुलिन सरस सौरभ नलिन, मत्त मधुकर निकर शरद की जामिनी।।
त्रिविध रोचक पवन ताप दिनमनि दवन, तहां ठाढ़े रवन संग सत कामिनी।
ताल बीना मृदंग सरस नाचत सुधंग, एक तैं एक संगीत की स्वामिनी।।
राग रागिनि जमी विपिन बरसत अमी, अधर बिंबन रमी मुरली अभिरामिनि।
लाग कट्टर उरप सप्त सुर सौं सुलप, लेति सुंदर सुघर राधिका नामिनि।।
तत्त थेई थेई करत गतिव नूतन धरत, पलटि डगमग ढरति मत्त गज गामिनि।
धाइ नव रंग धरी उरसि राजत खरी, उभय कल हंस हरिवंश घन दामिनि।।

पद-69

मोहिनि मोहन रंगे प्रेम सुरंगे, मत्त मुदित कल नाचत सुधंगे।
सकल-कला प्रवीन, कल्यान रागिनि लीन, कहत न बनै माधुरी अंग-अंगे।।
तरनि-तनया तीर, त्रिविध सखी समीर,मानौं मुनि-व्रत धर्यों कपोती कोकिला कीर।
नागरि-नवकिशोर, मिथुन मनसि चोर, सरस गावत दोऊ मंज़ुल मन्दर घोर।।
कंकन-किंकिनि धुनि, मुखर नूपुरन सुनि, जै श्री हित हरिवंश रस बरसै नव-तरुनि।।

पद-70

आजु सम्हारत नाहिन गोरी।
फूली फिरत मत्त करिनी ज्यौं, सुरत-समुद्र झकोरी।।
आलस बलित अरुन धूसर मषि, प्रगट करत द्रग चोरी।
पिय पर करुन अमी रस बरसत, अधर अरुनता थोरी।।
बाँधत भृंग उरज अम्बुज पर, अलक निबन्ध किशोरी।
संगम किरच-किरच कंचुकि बँद, सिथिल भई कटि डोरी।।
देत असीस निरिखि जुवतीजन, जिनकै प्रीति न थोरी।
जै श्री हित हरिवंश विपिन भूतल पर, संतत अविचल जोरी।।

पद-71

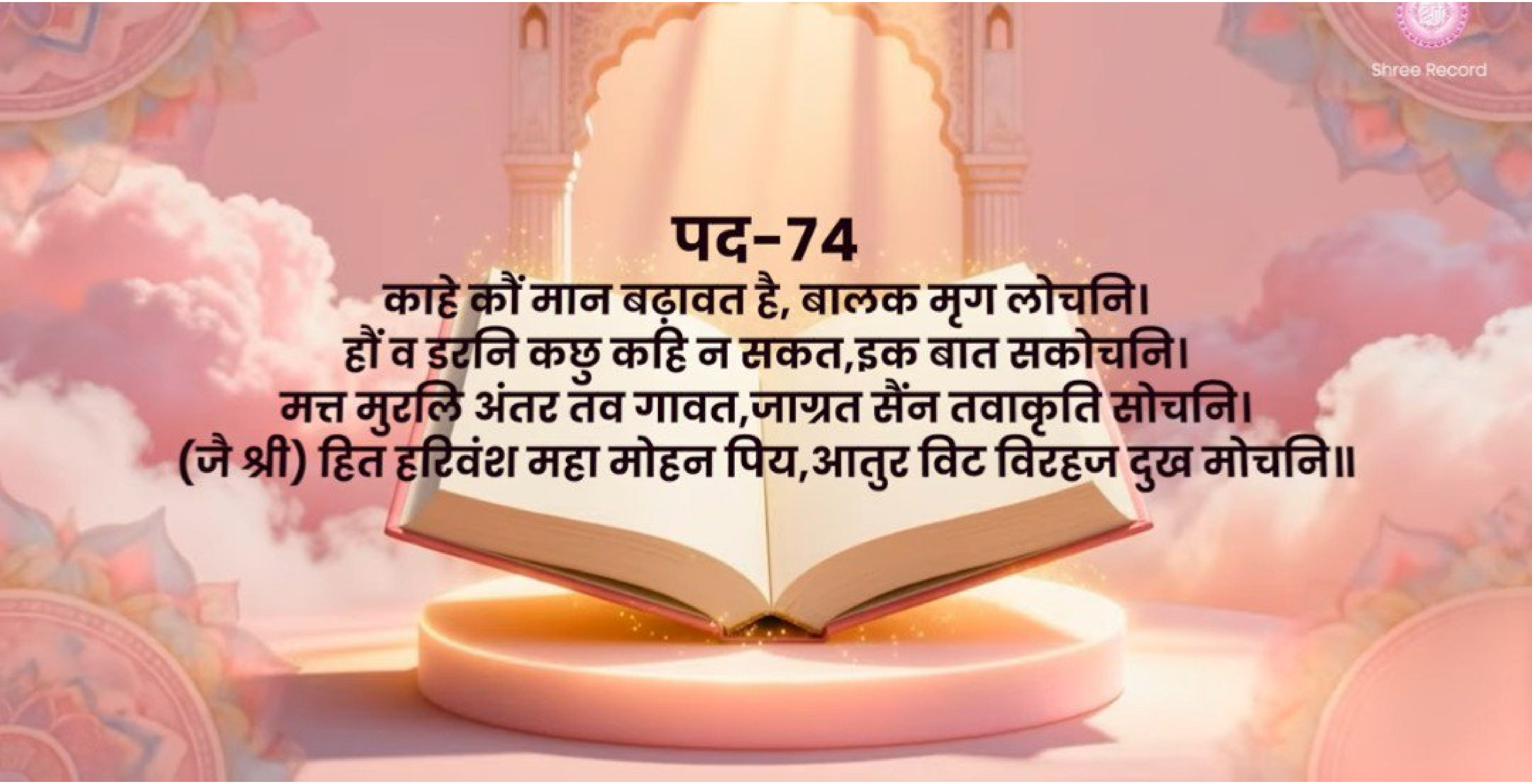
श्याम सँग राधिका रासमण्डल बनी।
बीच नंदलाल ब्रजबाल चंपक बरन, ज्यौंव घन तड़ित बिच कनक-मर्कतमणि।।
लेत गति मान तत्त थेई हस्तक भेद, स रे ग म प ध नि ये सप्त सुर नादनी।।
नित्त रस पहिर पट नील प्रकटित छबी, बदन जनु जलद में मकर की चाँदनी।।
राग-रागिनि तान मान संगीत मत, थकित राकेश नभ शरद की जामिनी।
जै श्रीहित हरिवंश प्रभु हंस कटि केहरी, दूरि क्रत मदन मद मत्त गजगामिनि।।

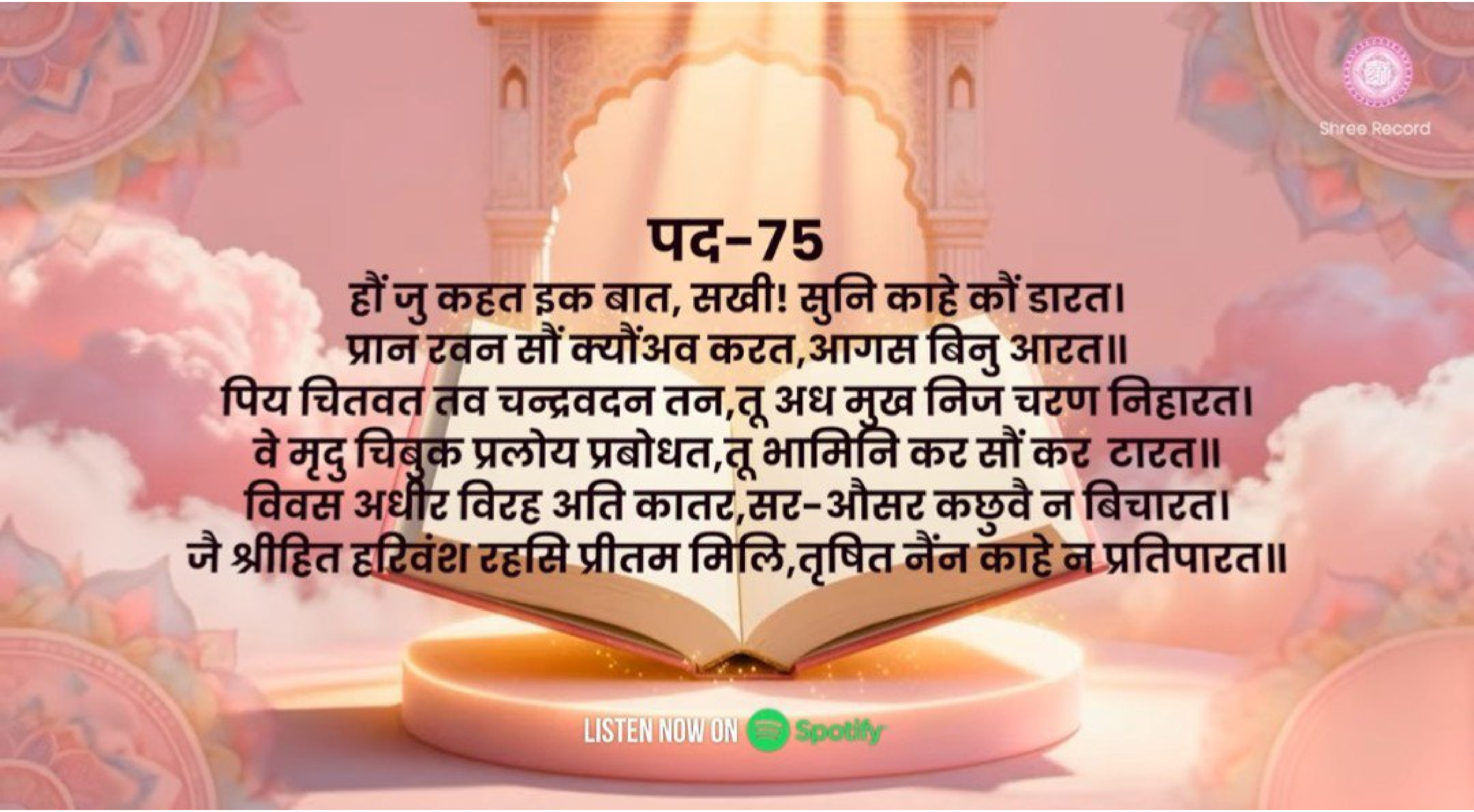
पद-72

सुन्दर पुलिन सुभग सुखदायक।
नव-नव घन अनुराग परस्पर, खेलत कुँवर नागरी नायक।।
शीतल हंससुता रस बीचिन, परसि पवन सीकर मृदु बरसत।
वर मन्दार कमल चंपक कुल, सौरभ सरस मिथुन मन हरसत।।
सकल सुधंग विलास परावधि, नाचत नवल मिले सुर गावत।
मृगज मयूर मराल भ्रमर पिक, अद्भुत कोटि मदन सिर नावत।।
निर्मित कुसुम सयन मधु पूरित, भाजन कनक निकुंज विराजत।
रजनी-मुख सुख-राशि परस्पर, सुरत समर दोऊ दल साजत।।
विट-कुल-नृपति किशोरी कर ध्रत, बुधि बल नीवी-बन्धन मोचत।
नेति-नेति वचनामृत बोलत, प्रणय कोप प्रीतम नहिं सोचत।।
जै श्री हित हरिवंश रसिक ललितादिक, लता-भवन रंध्रन अवलोकत।
अनुपम सुख भर भरित विवस असु, आनन्द-वारि कण्ठ द्रग रोकत।।

पद-73

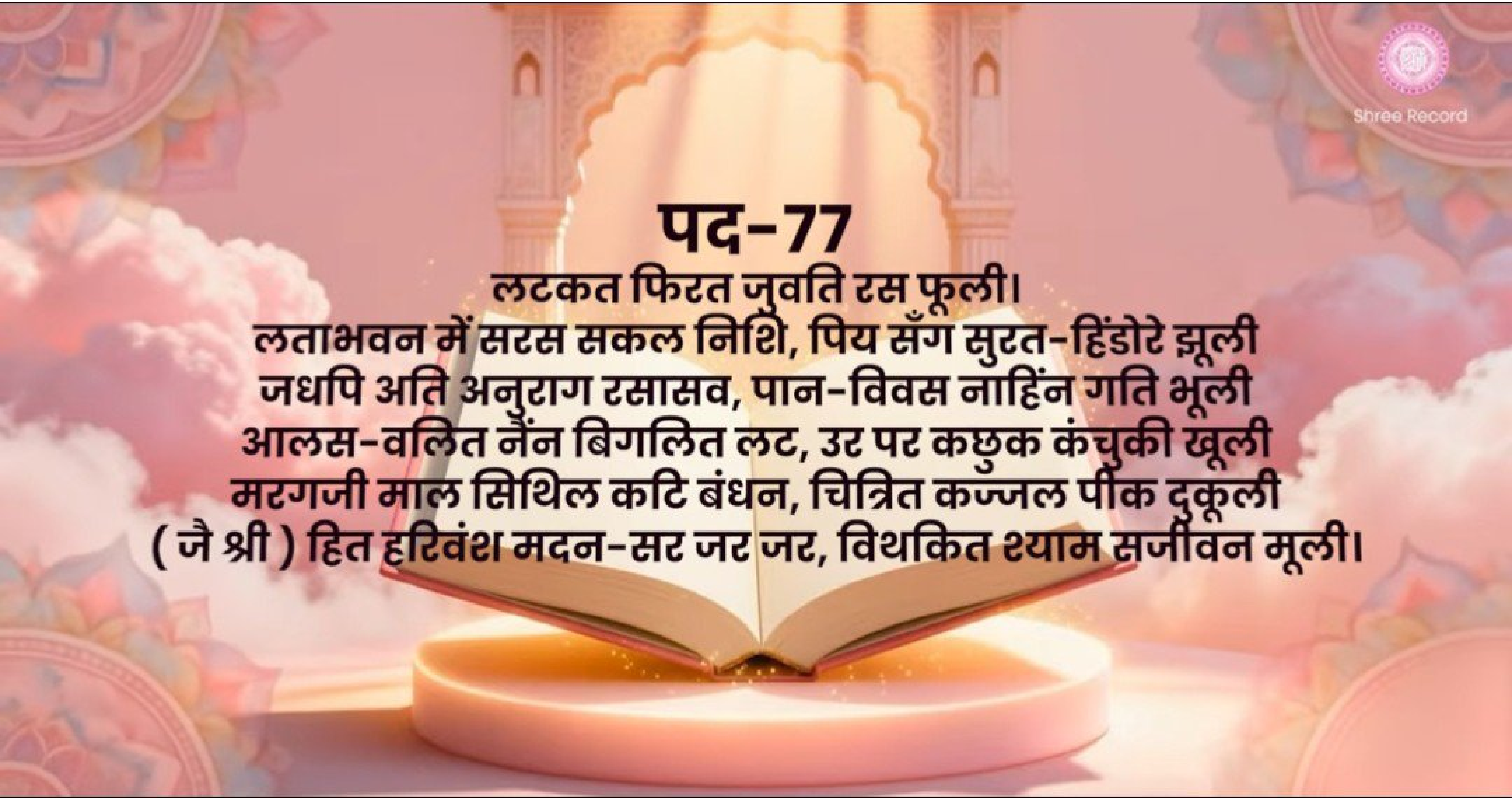
खंजन मीन मृगज मद मेटत,कहा कहौं नैनन की बातैं।
सुनि सुन्दरी कहाँ लौं सिखई,मोहन वसीकरन की घातैं ॥
बंक निसंक चपल अनियारे,अरून श्याम सित रचे कहाँ तैं ।
डरत न हरत परायौ सर्बसु ,मृदु मधु मिव मादिक द्रग पातैं॥
नैंकु प्रसन्न द्दष्टि पूरन करि,नहिं मोतन चितयौ प्रमदा तैं।
जै श्री हित हरिवंश हंस कल-गामिनि,भावै सो करहु प्रेम के नातैं॥


Shree Record
पद-74
काहे कौं मान बढ़ावत है, बालक मृग लोचनि।
हौं व डरनि कछु कहि न सकत,इक बात सकोचनि।
मत्त मुरलि अंतर तव गावत,जाग्रत सैंन तवाकृति सोचनि।
(जै श्री) हित हरिवंश महा मोहन पिय,आतुर विट विरहज दुख मोचनि॥


Shree Record
पद-75
हौं जु कहत इक बात, सखी! सुनि काहे कौं डारत।
प्रान रवन सौं क्यौंअव करत,आगस बिनु आरत॥
पिय चितवत तव चन्द्रवदन तन,तू अध मुख निज चरण निहारत।
वे मृदु चिबुक प्रलोय प्रबोधत,तू भामिनि कर सौं कर टारत॥
विवस अधीर विरह अति कातर,सर-औसर कछुवै न बिचारत।
जै श्रीहित हरिवंश रहसि प्रीतम मिलि,तृषित नैंन काहे न प्रतिपारत॥
LISTEN NOW ON Spotify

पद-76

नागरी निकुञ्ज ऐन किसलय दल रचित सैन
कोक-कला-कुशल कुँवरि अति उदार री।
सुरत रंग अंग-अंग हाव भाव भ्रकुटि भंग,माधुरी तरंग मथत कोटि मार री॥
मुखर नूपुरन सुभाव किंकिनी विचित्र राव,विरमि-विरमि नाथ बदत वर विहार री।
लाड़िली किशोर राज हंस-हंसिनी समाज,सींचत हरिवंश नयन सुरस सार री॥

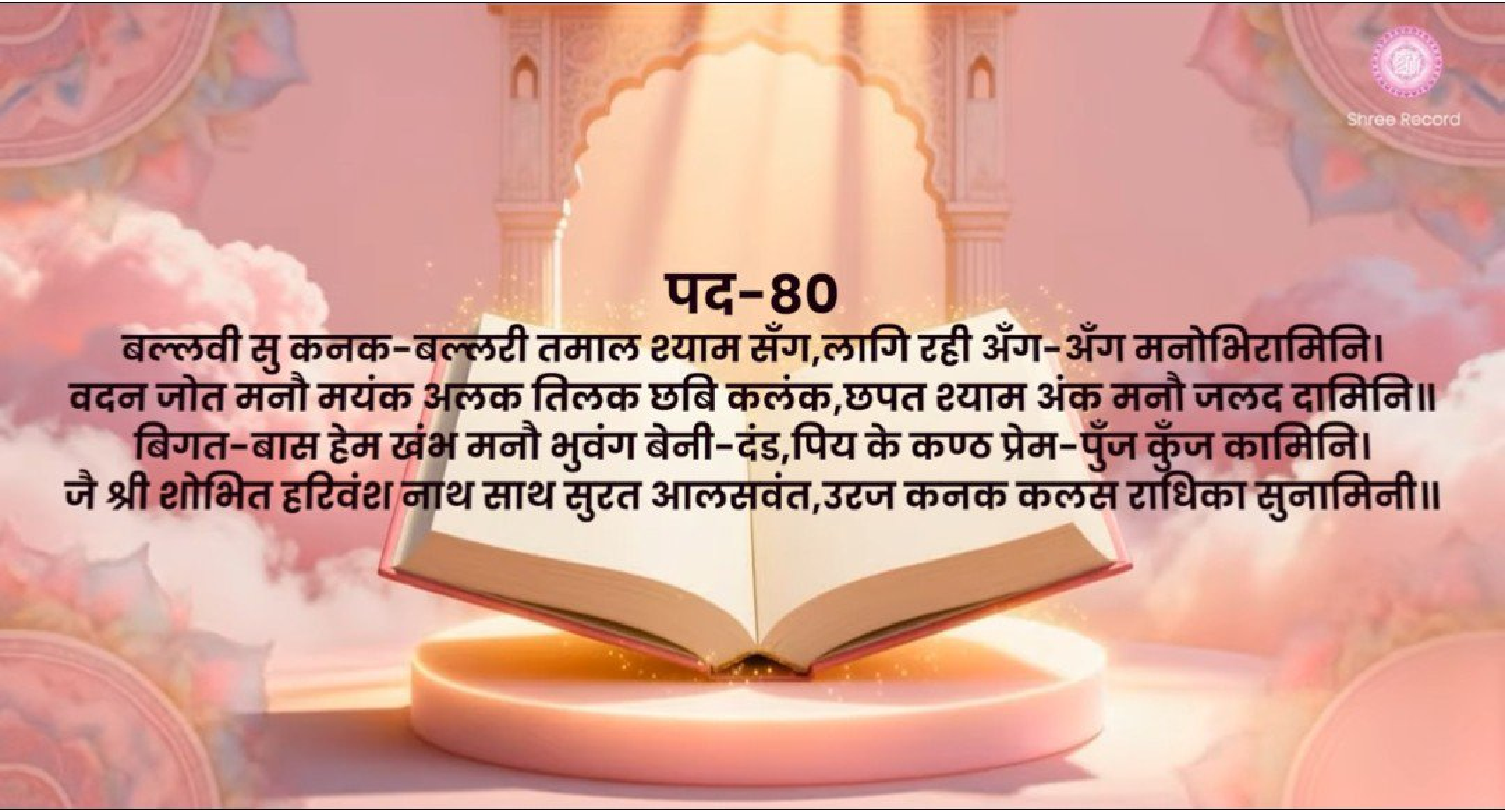

Shree Record
पद-77
लटकत फिरत जुवति रस फूली।
लताभवन में सरस सकल निशि, पिय सँग सुरत-हिंडोरे झूली
जधपि अति अनुराग रसासव, पान-विवस नाहिंन गति भूली
आलस-वलित नैंन बिगलित लट, उर पर कछुक कंचुकी खूली
मरगजी माल सिथिल कटि बंधन, चित्रित कज्जल पीक दुकूली
(जै श्री) हित हरिवंश मदन-सर जर जर, विथकित श्याम सजीवन मूली।

पद-78

सुधंग नाँचत नवल किशोरी।
थेई-थेई कहत चहत प्रीतम दिसि,वदनचन्द्र मनौ तृषित चकोरी॥
तान बन्धान मान में नागरि,देखत श्याम कहत हो-हो री।
जै श्री हित हरिवंश माधुरी अँग-अँग,बरबस लियौ मोहन चित चोरी॥

पद-79

रहसि-रहसि मोहन पिय के संग री,लड़ैति अति रस लटकत।
सरस सुधंग अंग में नागरि,थेई-थेई कहत अवनि पद पटकत॥
कोक कला कुल जानि शिरोमनि,अभिनय कुटिल भ्रकुटियन मटकत।
विवश भये प्रीतम अलि लंपट,निरखि करज नासापुट चटकत॥
गुन गन रसिक राइ चूड़ामनि,रिझवत पदिक हार पट झटकत।
जै श्री हित हरिवंश निकट दासी जन,लोचन-चषक रसासव गटकत॥



पद-80

बल्लवी सु कनक-बल्लरी तमाल श्याम सँग,लागि रही अँग-अँग मनोभिरामिनि।
वदन जोत मनौ मयंक अलक तिलक छबि कलंक,छपत श्याम अंक मनौ जलद दामिनि॥
बिगत-बास हेम खंभ मनौ भुवंग बेनी-दंड,पिय के कण्ठ प्रेम-पुँज कुँज कामिनि।
जै श्री शोभित हरिवंश नाथ साथ सुरत आलसवंत,उरज कनक कलस राधिका सुनामिनी॥

Shree Record

पद-81

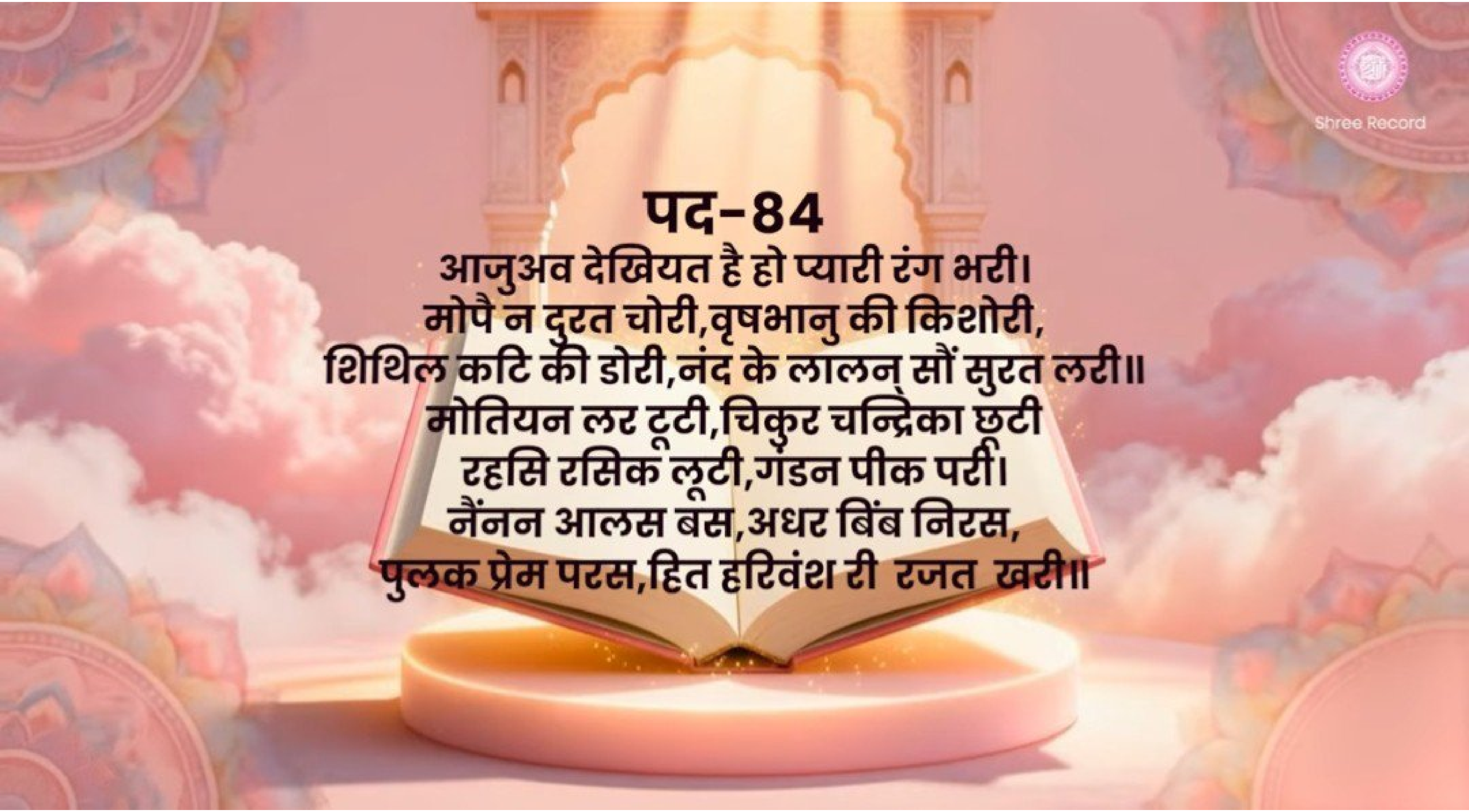
वृषभानुनन्दिनी मधुर कल गावै।
विकट औघर तान चर्चरी ताल सौं,नन्दनन्दन मनसि मोद उपजावै॥
प्रथम मज्जन चारु चीर कज्जल तिलक,स्रवन कुण्डल वदन चन्द्रन लजावै।
सुभग नक बेसरी रतन हाटक जरी,अधर बंधूक दसन कुंद चमकावै।
वलय कंकन चारु उरसि राजत हारु,कटिव किंकिनि चरन नूपुर बजावै।
हँस कल गामिनि मथत मद कामिनि,नखन मद यंतिका रंग रुचि धावै ॥
निर्त सागर रभस रहसि नागरि नवल,चन्द्र्-चाली विविध भेदन जनावै।
कोक विद्या विदित, भाई अभिनय निपुन,भ्रू-विलासन मकरकेतन नचावै॥
निविड़ कानन भवन, बाहु रंजित रवन,सरस आलाप सुख-पुंज बरसावै।
उभय संगम सिंधु, सुरत पूषन-बन्धु,द्रवत मकरन्द (श्री) हरिवंश अलि पावै॥

पद-82

नागरता की राशि किशोरी।
नव नागर कुल-मौलि सांवरौ,बरबस कियौ चितै मुख मोरी॥
रूप रुचिर अँग-अंग माधुरी,बिनु भूषन भूषित ब्रज गोरी।
छिन छिन कुशल सुधंग अँग में,कोक रभस रस-सिन्धु झकोरी॥
चंचल रसिक मधुप मोहन मन,राखे कनक कमल कुच कोरी।
प्रीतम नैंन जुगल खंजन खग,बाँधे विविध निबन्धन डोरी॥
अवनी उदर नाभि सरसी में,मनौं कछुक मादिक मधु घोरी।
जै श्री हित हरिवंश पिवत सुन्दर वर,सींव सुदृढ़ निगमन की तोरी॥

पद-83

छाँड़ि दै मानिनि मान मन धरिबौ।
प्रनत सुन्दर सुघर प्रानवल्लभ नवल,वचन आधीन सौं इतौ कत करिबौ॥
जपत हरि विवश तव नाम प्रतिपद् विमल,मनसि तव ध्यान तें निमिष नहिं टरिबौ।
घटत पल-पल सुभग शरद की जामिनि,भामिनि सरस अनुराग दिस ढरिबौ॥
हौं जु कछु कहत निजु बात सुनि मान सखि,सुमुखि बिनु काज घन विरह दुख भरिबौ।
मिलत हरिवंश हित कुन्ज किसलय सयन,करत कल केलि सुख-सिंधु में तरिबौ॥


Shree Record
पद-84
आजुअव देखियत है हो प्यारी रंग भरी।
मोपै न दुरत चोरी,वृषभानु की किशोरी,
शिथिल कटि की डोरी,नंद के लालन् सौं सुरत लरी॥
मोतियन लर टूटी,चिकुर चन्द्रिका छूटी
रहसि रसिक लूटी,गंडन पीक परी।
नैंनन आलस बस,अधर बिंब निरस,
पुलक प्रेम परस,हित हरिवंश री रजत खरी॥

श्रीहित चौरासी – फलस्तुति

भव-जल-निधि कौ नाव, काम-पावक कौ पानी।
प्रेम-भक्ति कौ मूल, मोद मंगल सुखदानी॥
निगम सार सिद्धान्त, सन्त विश्राम मधुर वर।
रसिकन कौ रस-सार, सकल अक्षर रस कौ घर॥
चौरासी हरिवंश कृत, पढ़ैं सुनै निशि-भोर।
छुटि चौरासी भ्रमन तैं, निरखैं जुगल किशोर।।1।।
निरखैं जुगल किशोर भोर अरु रैन न जानै।
पियै रूप रस मत्त भयौ कछु मनहिं न आनै॥
प्रेम लक्षणा भक्ति होइ हिय आनन्द कारी।
अरु वृन्दावन वास सखी सुख के अधिकारी॥
कुंज महल की टहल सुख, दंपति संपति पाई है।
(जैश्री) रूपलाल हित प्रीति सौं जो चौरासी गाइ है।।2।।